TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | सोमवार | 21 अगस्त 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :25 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

देश का सर्वाधिक निवेश वाला राज्य बना उत्तर प्रदेश : योगी

विश्व उद्यमिता दिवस पर सूक्ष्म उद्यमियों को सूक्ष्म उद्यमी दुर्घटना योजना का शुभारंभ

लोक पहल

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विश्व उद्यमिता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कहा कि उत्तर प्रदेश देश का सर्वाधिक निवेश हासिल करने वाला राज्य बन गया है। आज से करीब छह वर्ष पूर्व जहां उत्तर प्रदेश में उद्यमी अपना निवेष करते हुए डरते थे वहीं अब उत्तर प्रदेष उद्यमियों के लिए पहली पसंद बनकर उभरा है। उत्तर प्रदेश जीएसटी पंजीकरण के दायरे से बाहर सूक्ष्म उद्यमियों को पांच लाख रुपये का सुरक्षा कवच देना वाला देश का पहला राज्य बन गया है। विश्व उद्यमिता दिवस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री सूक्ष्म उद्यमी दुर्घटना योजना का शुभारंभ किया। इस योजना से प्रदेश के करीब 9० लाख छोटे उद्यमियों को सीधा फ ायदा होगा। इस अवसर पर एमएसएमई मंत्री राकेश सचान ने तीन जिलों में प्लेज पार्क स्थापित करने वाले लाभान्वितों को करीब 12 करोड़ रुपये की चेक देकर सम्मानित किया। प्लेज पार्क की स्कीम देश की पहली स्कीम है।

लोकभवन में विश्व उद्यमिता दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश से सैकड़ों उद्यमियों की मौजूदगी में सूक्ष्म उद्यमी दुर्घटना योजना का आगाज योगी आदित्यनाथ ने किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस दिवस के साथ सावन का सोमवार और नागपंचमी का त्योहार भी है। नागपंचमी जीव जंतुओं और प्रकृति के प्रति प्रेम व हर व्यक्ति के अंदर छिपी आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक है। उद्यमी अपनी इसी शक्ति के दम पर अपनी अद्भुत कला के जरिए इकाई की स्थापना करते हैं।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रदेश के 96 लाख एमएसएमई उद्यमियों में 97 फीसदी सूक्ष्म हैं। उनके उद्यम में 5 करोड़ से कम की पूंजी और सालाना टर्नओवर 4० लाख से कम है। उनकी सुरक्षा की गारंटी नहीं थी जो आज से मिलेगी। अब प्रदेश के 9० लाख एमएसएमई उद्यमियों को पांच लाख के बीमा का लाभ मिलेगा लेकिन इसका लाभ लेने के लिए पंजीकरण जरूर कराएं। अभी 27 लाख ने पंजीकरण कराया है। 4० लाख से ज्यादा टर्नओवर वाले कारोबारियों ने पहले ही दस लाख का बीमा करा रखा है, जिसका लाभ मिल रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यूपी देश का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है। इसके बावजूद निवेशक यहां आना नहीं चाहते थे। लोग यहां आने से डरते थे। उत्तर प्रदेश का नाम सुनकर लोगों

में भय पैदा होता था पर नीति आयोग और आरबीआई की रिपोर्ट देखें तो पता चलेगा कि छह वर्ष में यूपी देश का सर्वाधिक निवेश वाला राज्य बन गया है। यूपी अब बीमारू राज्य नहीं रह गया है।

कांग्रेस सीडब्ल्यूसी में सचिन पायलट और शशि थरूर को मिली जगह

उत्तर प्रदेश से प्रमोद तिवारी और पीएल पूनिया का नाम गायब

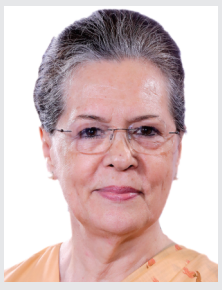

लोक पहल

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारियों में जुटी कांग्रेस ने अपनी सबसे प्रमुख संस्था कांग्रेस कार्य समिति की घोषणा कर दी है। कांग्रेस अध्यक्ष का पद संभालने के दस महीने बाद मल्लिकार्जुन खड़गे ने नई कांग्रेस कार्यसमिति (सीडब्ल्यूसी) का गठन किया है, जिसमें कई ऐसे नेताओं को जगह दी गई है, जो बगावती सुर दिखा चुके हैं। कार्यसमिति के गठन को लोकसभा चुनाव से चंद महीनों पहले खड़गे की ओर से संतुलन बैठाने की कोशिश बताया है। खास बात ये है कि खड़गे ने सीडब्ल्यूसी में अपने खिलाफ कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने वाले शशि थरूर और युवा नेता सचिन पायलट, गौरव गोगोई, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण और चरणजीत सिंह चन्नी को भी जगह दी है।

कांग्रेस की 39 सदस्यों वाली कार्यसमिति में गुजरात के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष जगदीश ठाकोर, पूर्व जम्मू-कश्मीर अध्यक्ष गुलाम अहमद मीर, गुजरात के नेता दीपक बाबरिया, पश्चिम बंगाल की नेता दीपा दास मुंशी, आंध्र प्रदेश के पूर्व कांग्रेस चीफएन रघुवीरा रेड्डी, छत्तीसगढ़ के गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू, राज्यसभा सांसद सैयद नासिर हुसैन, मध्य प्रदेश के युवा विधायक कमलेश्वर पटेल और राजस्थान के मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालवीय को भी जगह दी गई है। कांग्रेस कार्यसमिति में 39 नियमित सदस्य, 32 परमानेंट इनवाइटी और 13 स्पेशल इनवाइटी मिलाकर कुल 84 सदस्य होते हैं।

थरूर को शामिल करके खड़गे ने ये संकेत दिया है कि उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष चुनाव के दौरान प्रतिद्वंद्विता को पार्टी के भीतर लोकतंत्र के तौर पर देखा है। लेकिन पायलट का कद बढ़ाकर खड़गे ने यह संदेश देने की कोशिश की है कि राजस्थान की राजनीति में अहम भूमिका और मुख्यमंत्री का पद न दिए जाने के बावजूद पार्टी को सचिन पायलट की परवाह है।

बीते साल उदयपुर चिंतन शिविर में पार्टी ने ये महसूस किया था कि सीडब्ल्यूसी से लेकर ब्लॉक समितियों तक 5० फीसदी सदस्यों की संख्या 5० साल से कम होनी चाहिए। हालांकि, रायपुर में इस नियम में थोड़े बदलाव किए गए. पार्टी संविधान में ये प्रावधान किया गया कि 35 सदस्यों में से 5० फीसदी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, युवा और महिला होंगे।

कांग्रेस की मुख्य इकाई में फेरबदल आदिवासी, पिछड़े और अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व को दिखाता है और कुछ नेता शायद इसी गुणा-भाग के आधार पर जगह पाने में कामयाब रहे हैं. 39 सदस्यीय निकाय में, केवल तीन - पायलट, गोगोई और पटेल ही 5० वर्ष से कम आयु के हैं। खड़गे ने कई नेताओं को परमानेंट इनवाइटी के तौर पर भी समिति में जगह दी है। इनमें कर्नाटक के पूर्व सीएम एम वीरप्पा मोइली, लोकसभा सांसद मनीष तिवारी, त्रिपुरा के सुदीप रॉय बरमन, केरल के रमेश चेन्नीथाला, कर्नाटक के बीके हरिप्रसाद, हिमाचल प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा सिंह, पूर्व गोवा कांग्रेस चीफ गिरिश चोडनकर, ब्यूरोक्रैट से राजनेता बने के राजू, मुंबई के पूर्व मेयर चंद्रकांत हंडोर, मध्य प्रदेश के मीनाक्षी नटराजन, राज्यसभा सांसद फूलो देवी नेताम, अविभाजित आंध्र प्रदेश के पूर्व डिप्टी सीएम दामोदर राजा नरसिम्हा और मोहन प्रकाश भी हैं।

सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा, मनमोहन सिंह, एके एंटनी, अंबिका सोनी, केसी वेणुगोपाल, मुकुल वासनिक, पी. चिदंबरम, आनंद शर्मा, तारिक अनवर, अजय माकन, कुमारी शैलजा, अभिषेक सिंघवी, गैखंगम, लाल थानवाला और रणदीप सिंह सुरजेवाला को सीडब्ल्यूसी में जगह मिली है। आनंद शर्मा, वीरप्पा मोइली, शशि थरूर और मनीष तिवारी कांग्रेस के उस 23 नेताओं के समूह का भी हिस्सा रहे हैं, जिन्होंने 2०2० में सोनिया गांधी को चिट्ठी लिखकर पार्टी में बड़े बदलावों की मांग की थी। हालांकि, सीडब्ल्यूसी में राजस्थान के नेता रघुवीर सिंह मीणा, उत्तर प्रदेश के नेता प्रमोद तिवारी और पीएल पूनिया का नाम न होना चौंकाता है।

सनी देओल के बंगले की नीलामी हुई रद्द, कांग्रेस ने कसा तंज

नई दिल्ली एजेंसी। गदर-2 फिल्म की अपार सफलता से सुर्खियों में छाए अभिनेता सनी देओल के बंगले की नीलामी फिलहाल रोक दी गई है। अचानक नीलामी रोके जाने पर कांग्रेस ने तंज कसा है। भाजपा सांसद सनी देओल के मुंबई के जुहू में स्थित बंगले की नीलामी रोक दी गई है। बैंक ऑफबड़ौदा ने ई-ऑक्शन का नोटिस वापस ले लिया है। इसकी वजह टेक्निकल बताई जा रही है। वहीं, बैंक ऑफ बड़ौदा के अचानक लिए गए यू-टर्न पर कांग्रेस हमलावर हो गई है।

बता दें कि अभिनेता सनी देओल ने बैंक ऑफबड़ौदा से एक बड़ी धनराषि लोन के रूप में ली थी उन्होंने 56 करोड़ के लोन का भुगतान नहीं किया, इसलिए बैंक ऑफबड़ौदा ने सनी देओल के विला की नीलामी को लेकर विज्ञापन निकाला था। बता दें कि सनी ने लोन लेकर मुंबई के जुहू में स्थित 'सनी विला' को मॉर्टगेज पर दिया था। इसके बदले उन्हें बैंक को करीबन 56 करोड़ रुपये चुकाने थे। लोन और इसपर लगा ब्याज वसूलने के लिए बैंक ने एक्टर की प्रॉपर्टी को नीलाम करने का फैसला किया था। विज्ञापन के मुताबिक, सनी विला की नीलामी 25 सिंतबर को होनी थी। ऑक्शन के लिए बैंक की तरफसे प्रॉपर्टी की कीमत 51.43 करोड़ रखी गई थी। देओल्स की टीम ने ऑक्शन नोटिस की खबर को कंफर्म किया था हालांकि उनकी तरफ से कहा गया था कि नोटिस में मेंशन किया गया अमाउंट सही नहीं है। ये भी बताया गया कि सनी देओल 1-2 दिन में सारी रकम का भुगतान कर देंगे। इस मामले में कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने तंज कसते हुए कहा कि आखिर ऐसे कौन से कारण थे कि बैंक ऑफबड़ौदा ने 24 घंटे के अंदर भाजपा सांसद सनी देओल के जुहू में स्थित आवास को ई-नीलामी नोटिस को वापस ले लिया है।

मुशिकल में नेता कहीं 'स्याही' तो कहीं 'जूता'

दारा सिंह पर स्याही फेंकने के बाद अब स्वामी प्रसाद मौर्य पर फेंका गया जूता

लोक पहल

लखनऊ। समाजवादी पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हुए पूर्वमंत्री दारा सिंह चौहान के ऊपर स्याही फेंकने का मामला अभी ठंडा ही नहीं पड़ा था कि भाजपा छोड़कर सपा में शामिल हुए स्वामी प्रसाद मौर्य पर जूता फेंका गया है। ओबीसी सम्मेलन में वकील के भेष में आए आकाश सैनी नाम के शख्स ने यह जूता स्वामी प्रसाद पर फेंका। मौके पर मौजूद सपा और मौर्या समर्थको ने हमलावर को पकड़ लिया और जमकर पीटा। इसके बाद आरोपी को लोगों ने पुलिस के हवाले कर दिया। आपको बता दें कि रामचरितमानस के खिलाफ बयान देने के बाद विवादों में आए स्वामी प्रसाद मौर्य पर इसी साल की फरवरी में भी काली स्याही फेंकी गई थी। इससे पहले सपा से इस्तीफा देकर बीजेपी में शामिल हुए दारा सिंह चौहान पर भी काली स्याही फेंकी गई थी। दरअसल यूपी में मऊ की घोसी विधानसभा सीट पर उपचुनाव होना है। इसके लिए 5 सितंबर को मतदान और 8 सितंबर को काउंटिंग होगी। वो विधानसभा क्षेत्र में चुनाव प्रचार के लिए निकले थे। इस दौरान उन पर स्याही फेंकी गई। ये घटना कोपागंज थाना क्षेत्र के अदरी मोहल्ले की है। बीजेपी के जिला अध्यक्ष प्रवीण गुप्ता ने इसका आरोप समाजवादी पार्टी पर लगाया है। बीजेपी का दावा है कि मोनू यादव उर्फडायमंड नाम के युवक ने पार्टी प्रत्याशी के ऊपर स्याही फेंकी है। इसकी शिकायत पुलिस से की गई है। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

शाहजहांपुर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

लोक पहल

शाहजहांपुर। जिले भर में आजादी का जश्न हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया। कलेक्ट्रेट में डीएम ने ध्वजारोहण कियागया। विभिन्न संस्थाओं, सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में भी ध्वजारोहण के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजनहुआ। क्लेक्ट्रेट में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रीयएकता की शपथ दिलाई गई। जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव, महापौर अर्चना वर्मा, सीडीओ डॉ. एसके सिंह, नगर आयुक्तसंतोष कुमार शर्मा आदि ने गांधी भवन में महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री, सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमाओं पर माल्यार्पणकिया।कलेक्ट्रेट में हुई गोष्ठी में डीएम ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को शाल ओढ़ाकर एवं नारियल भेंटकर सम्मानित किया

गया।जिला अस्पताल में मरीजों को फल वितरित किए गए। पुलिस लाइन में परेड निकाली गई तथा पौधरोपण किया गया। नायकदुनाथ सिंह स्टेडियम में क्रासकंट्री रेस हुई। जिला कारागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए तथा गांधी भवन में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।जनपद न्यायालय में झंडारोहण कर अधिकारियों व कर्मचारियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दी। इसके बाद उच्चन्यायालय, इलाहाबाद के निर्देश पर विशेष मेगा पौधरोपण अभियान महोत्सव का आयोजन जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से जिला न्यायालय परिसर में जिला एवं सत्र न्यायाधीश भानु देव शर्मा के नेतृत्व में किया गया।स्वतंत्रता दिवस पर स्कूल, कॉलेजों में झंडारोहण और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। जीआईसी में प्रधानाचार्य अनिल कुमार, देवी प्रसाद स्कूल में प्रबंधक केशव चंद्र मिश्र, एसपी कॉलेज में प्रधानाचार्य संजय कुमार,लीड कॉन्वेंट में प्रबंधक मोहम्मद जमाल व प्रधानाचार्य तरानाजमाल ने झंडारोहण किया।एसएस कॉलेज में प्राचार्य डॉ. आरके आजाद, जीएफ कॉलेज में प्राचार्य मोहम्मद तारिक, आर्य महिला डिग्री कॉलेज में प्राचार्यासुनीता जैसल ने झंडारोहण किया।देशभक्ति से ओतप्रोत नाटक तथा अन्य रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए।विद्यालय के प्रबंधक व प्रधानाचार्यों ने स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए उनमें नैतिक मूल्यों के विकास पर बल दिया। इसी तरह से अन्य विद्यालयों में भी झंडारोहण हुआ।

मुमुक्षु शिक्षा संकुल में धूमधाम से मनाया गया आजादी का पर्व

लोक पहल

शाहजहांपुर। मुमुक्षु शिक्षा संकुल में 77 वां स्वतन्त्रता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय परिसर में सचिव डॉ अवनीश कुमार मिश्र, प्राचार्य प्रो आर के आजाद और उप प्राचार्य प्रो अनुराग अग्रवाल ने ध्वजारोहण किया। महाविद्यालय की आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो आदित्य कुमार सिंह ने उच्च शिक्षा निदेशक का संदेश पढ़कर सुनाया। महाविद्यालय के एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ आलोक कुमार सिंह के संचालन में हुए कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन महाविद्यालय के उपप्राचार्य प्रो अनुराग अग्रवाल ने किया। स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में शंकर मुमुक्षु विद्या पीठ के छात्रों के नेतृत्व में संकुल के पांचों कॉलेजों के छात्रों ने बरेली मोड़ से अजीजगंज तक तिरंगा रैली भी निकाली। रैली में

सैकड़ों छात्र-छात्राओं ने अपने हाथ में तिरंगा लेकर भारत माता की जय और वंदे मातरम् के नारों से आकाश को गुंजायमान कर दिया। एनसीसी के कैडेटों भी तिरंगा रैली में शामिल हुए। रैली का समापन स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय परिसर में हुआ। विधि महाविद्यालय में प्राचार्य डा जे एस ओझा ने रैली का स्वागत किया। मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने ध्वजारोहण करके संकुल के समस्त शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को शुभकामना संदेश दिया। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति संपूर्ण विश्व में व्याप्त है। हमारे पूर्वजों ने हमें वसुधैव कुटुंबकम का संदेश दिया था। आज विश्व का कोई भी भूभाग ऐसा नहीं है जहां पर भारत की संस्कृति एवं धरोहर के अवशेष विद्यमान न हों। इसके उपरांत प्रो अनुराग अग्रवाल ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी शिक्षकों और छात्रों को पंच प्रण की प्रतिज्ञा करवाई।

कार्यक्रम में डॉ अमीर सिंह यादव, डा मेघना मेहदीरत्ता, पवन गुप्ता, मृदुल शुक्ला, अनिल सिंह, डॉ शिशिर शुक्ला, डॉ कविता भटनागर, डॉ प्रतिभा सक्सेना, डॉ रामनिवास गुप्ता, मनोज अग्रवाल, कमलेश त्रिवेदी, झरना रस्तोगी सहित समस्त शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पंचप्रण की परिकल्पना को साकार करें युवाः मिथलेश कुमार

राष्ट्र निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाये युवाशक्ति : डा. सुधीर गुप्ता

लोक पहल

शाहजहांपुर। नेहरु युवा केन्द्र व अमर शहीद परमवीर चक्र नायक जदुनाथ सिंह जन कल्याण सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में युवा संवादरू भारत/247 युवा परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन पुवायां के पुवायां इंटर कॉलेज में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार, एमएलसी डॉ सुधीर गुप्ता, ब्लाक प्रमुख सुरजन लाल एवं अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर एवं स्वामी विवेकानंद एवं माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया । सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत से कार्यक्रम की शुरुआत हुई । जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया ने सभी को पंच प्रण के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और युवाओं से आग्रह किया कि वे इन्हें चरितार्थ करने के लिये इस ओर निरन्तर प्रयासरत रहें।राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार ने युवाओं को भारत का भविष्य बताते हुए उनसे पंच प्रण की परिकल्पना को चरितार्थ करने का आव्हान किया । एमएलसी डॉ सुधीर गुप्ता ने भी सभी युवाओं से अधिकतम संख्या में राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में सहभागी

पुवायां इंटर कॉलेज में युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन

बनने की अपील की। 'मेरी माटी मेरा देश' माटी को नमन वीरों का वंदन अंतर्गत सेना के सेवानिवृत्त अधिकारियों दिनेश प्रताप सिंह सिंह, अमर सिंह राठौर, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिवारजन राजीव कटियार, राजीव कुमार राजे, शिवम तिवारी, उत्कर्ष पाठक, उमाकांत पांडेय, यशोविक्रम सिंह, राजीव गंगवार को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। इस दौरान पंच प्रण शपथ और पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का भी संदेश दिया गया।आयोजन में प्रबंधक राजीव सिंह, प्रधानाचार्य जेपी मौर्या, जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया, नमामि गंगे डी पीओ विनय सक्सेना, मुनीश सिंह परिहार, मुकेश सिंह परिहार, अरविंद मिश्रा, विपिन शुक्ला, आदि का विशेष सहयोग रहा।इस अवसर पर विपिन शुक्ला राजीव शर्मा, आर एल मौर्या, राहुल मिश्रा, विकास तिवारी, प्रशांत पटेल, आशीष मिश्रा, संजीव कुमार, पंकज वर्मा, मानवेंद्र उपस्थित रहे।

साईं शिक्षायतन स्कूल में धूमधाम के साथ मनाया गया स्वाधीनता दिवस

लोक पहल

शाहजहांपुर। साईं शिक्षायतन स्कूल में 77वां स्वतंत्रता दिवस समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सेना के कुमाऊनी रेजिमेंट के सूबेदार अशोक सिंह ने ध्वजारोहण कर किया। विद्यालय के हर कक्षा वर्ग के विद्यार्थियों ने स्वागत नृत्य,हम नन्हे मुन्ने बच्चे, योद्धा बन गई मैं, इंडिया वाले, स्वच्छता अभियान पर आधारित नुक्कड़ नाटक, नृत्य एवं गायन, देशभक्ति से ओत-प्रोत कविताओं की प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया। सबसे आकर्षण का केंद्र फैंसी ड्रेस रहा जिसमें विभिन्न क्रांतिकारियों की वेशभूषा में

बच्चों ने उनके विषय के बारे में भी बताया। मुख्य अतिथि ने बच्चों को आशीर्वचन दिये।। कार्यक्रम में विद्यालय के निदेशक विवेक श्रीवास्तव, प्रबंधिका नीता श्रीवास्तव प्रधानाचार्य रचना बुधवार का विशेष सहयोग रहा।अंत में विद्यालय की प्रबंधिका नीता श्रीवास्तव ने सभी का आभार व्यक्त कियाकार्यक्रम का संचालन श्वेता सिंह एवं अंजना सक्सेना ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के स्टॉफ राजवंत कौर, गीतांजलि, सुमोना बोस, हरि ओम, शोएब आलम, हेमंत अग्निहोत्री, मनोज, कृतिका, सुप्रिया, रोहित, विभा आदि का सहयोग रहा।

श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

देशभक्ति के कार्यक्रम प्रस्तुत कर बच्चों ने बांधा समां

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ सीनियर सेकेंडरी स्कूल में 77वां स्वाधीनता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सप्ताह भर से चल रहे विभिन्न आयोजनों का भव्य समापन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाचार्या डॉ मेघना मेंहदीरत्ता ने ध्वजारोहण कर किया, राष्ट्रगान तथा बैंड के साथ चारों सदनों के बच्चों ने मार्च कर सलामी दी।

इसके पश्चात योगनाट्यम, भाषण,समूह नृत्य,समूह गीत आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों की लंबी श्रृंखला बच्चों ने प्रस्तुत कर समा बांध दिया। विद्यालय के कक्षा 6 से 12 तक के छात्र-छात्राओं ने बैंड के साथ सड़क पर जुलूस निकालकर देशभक्ति एवं एकता का परिचय दिया।संचालन वसुंधरा एवं वर्णिका ने किया। आयोजन में समस्त स्टाफका योगदान रहा।

केआर पेपर्स में धूमधाम से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

लोक पहल

शाहजहांपुर। केआर पल्प एण्ड पेपर्स में 77वां स्वतंत्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कम्पनी के अध्यक्ष डीपी धीमान ने झण्डारोहण किया और गॉड ऑफऑनर लिया। इस मौके पर कम्पनी के सभी अधिकारिया व कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से राष्ट्रगान में हिस्सा लिया। कम्पनी के अध्यक्ष डीपी धीमान ने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को राष्ट्र के प्रति कर्तव्य बोध की शपथ दिलाई। कम्पनी के उप महाप्रबंधक सुरेन्द्र शर्मा ने इस मौके पर कहा कि कम्पनी के सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने कार्य को प्राथमिकता दें और राष्ट्रहित में योगदान दें यही उनके लिए सच्ची राष्ट्रभक्ति है। कार्यक्रम का संचालन अशोक लोधी ने किया। इस मौके पर कम्पनी के सभी अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। कम्पनी परिसर को तिरंगे झण्डों से सजाया गया था।

राष्ट्र प्रेम की अलख जगा गया 'जरा याद करो कुर्बानी'

युवक बिरादरी के डा स्वप्निल यादव को मिला 'सर्वश्रेष्ठ बिरादर सम्मान'

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर युवक बिरादरी व जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वाधान में 'जरा याद करो कुर्बानी' का आयोजन गांधी भवन में किया गया। कार्यक्रम के समापन पर प्रांतीय संचालक डॉ शरद राही ने वर्ष 22-23 का 'सर्वश्रेष्ठ बिरादर सम्मान' डॉ स्वप्निल यादव को अंगवस्त्र पहना कर दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नगर आयुक्त संतोष शर्मा, जिला विद्यालय निरीक्षक हरिवंश कुमार, बेसिक शिक्षा अधिकारी रणवीर सिंह सहित संस्था के पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित करके किया। उद्घघाटन उपरांत नगर आयुक्त शर्मा ने स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए युवक बिरादरी के इस प्रयास की प्रशंशा की। कार्यक्रम में शहर के 17 विद्यालयों के छात्र छात्राओं ने बहुत ही दर्शनीय प्रस्तुतियां दी। जिसमें मुख्य रूप से रानी लक्ष्मीबाई, सोशल मीडिया के दुष्परिणाम, चंद्रयान की सफलता,स्वच्छता अभियान विषय पर आधारित सामूहिक नृत्य ने भरपूर तालियां बटोरी वहीं छोटे छोटे बच्चों की प्रस्तुतियां भी अत्यंत सराहनीय रही। अंत में समस्त विद्यालयों के सहभागी छात्र छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

दर्शकों से खचाखच भरे प्रेक्षागृह में हुए सफल कार्यक्रम का व्यवस्थित संयोजन बिरादरी के जिला अध्यक्ष पवन सिंह, राष्ट्रीय पार्षद नितेश गुप्ता, महामंत्री डॉ स्वप्निल यादव, निदेशक निकुंज गुप्ता, जितिन गुप्ता ने किया। आयोजन में स्काउट गाइड कमिश्नर दपिंदर कौर, निखत परवीन, एस एस कॉलेज की संगीत प्रवक्ता डॉ प्रतिभा सक्सेना, नितेश गुप्ता, डॉ स्वप्निल यादव का विषेष सहयोग रहा।

राजकीय बालगृह में रही स्वाधीनता दिवस की धूम

राजकीय बालगृह में रही स्वाधीनता दिवस की धूम

लोक पहल

शाहजहांपुर। सखी वन स्टाफ सेंटर पर स्वतंत्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। डीपीओ गौरव मिश्रा ने झंडारोहण किया। इस अवसर पर जिला बाल संरक्षण इकाई से संरक्षण अधिकारी निकेत कुमार सिंह, इरफान अहमद, प्रतिभा मिश्रा, अवनीश कुमार, सखी वन स्टॉप सेंटर से सेंटर मैनेजर नमिता यादव, अर्चा मिश्रा, प्रियांशी पांडे, अंतिमा शुक्ला, राखी, ऋषि पाल, हेमा, महिला शक्ति केंद्र से जिला कोऑर्डिनेटर अमृता दीक्षित, कीर्ति मिश्रा आदि उपस्थित रहे।

इस दौरान राजकीय संप्रेषण गृह किशोर एवं राजकीय बाल ग्रह बालक के बालकों ने भी स्वतंत्रता दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर जिला प्रोबेशन अधिकारी गौरव मिश्रा ने जनपद के वीर शहीदों के सम्मान में बनवाए गए शिला फलक का अनावरण किया तथा भारत की एकता एवं अखंडता की शपथ दिलाई गई। राजकीय बालगृह में बालकों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस अवसर पर संस्था अधीक्षक नेमचंद, राम विनय यादव, शोभा, राम सूरत यादव, गुड्डू, आकाश, संतोष, राममूर्ति, नरेंद्र, पुष्पा, पुनीत, सुतीक्षण एवं प्रदीप कुमार आदि मौजूद रहे।

नगर निगम में आन बान शान से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

महापौर अर्चना वर्मा व नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने किया झण्डारोहण

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर निगम कार्यालय में 77वां स्वाधीनता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर राज्य सभा सांसद मिथलेश कुमार, महापौर अर्चना वर्मा, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव, अपर नगर आयुक्त एसके सिंह, सहायक नगर आयुक्त रश्मि भारती एवं नगर निगम के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों ने नगर निगम प्रांगण, गाँधी भवन, टाउन हॉल स्थित शहीद पार्क में स्थापित रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह, रमेश चन्द्र पार्क में स्थापित रमेश चन्द्र की प्रतिमा एवं शहीद अशफाक उल्ला खां की मजार पर व अन्य वीर शहीदों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर नमन किया।

इस दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सजीव प्रसारण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके

उपरांत महापौर अर्चना वर्मा, नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने सयुंक्त रूप से ध्वजारोहण किया। महापौर ने पंच प्राण प्रतिज्ञा के क्रम में सभी को अपने देश के प्रति निष्ठा भाव व ईमानदारी से कार्य करने के लिए शपथ दिलाई। इस अवसर पर पार्षद दिवाकर मिश्रा ने नगर निगम के कर्मचारियों को सम्मानित किया। इस दौरान न्यू सिटी ककरा में स्थापित जैव विविधता पार्क में पौधारोपण भी किया गया।

इस दौरान कार्यकारिणी उपाध्यक्ष वेद प्रकाश मौर्य, राजेश वर्मा, अपर नगर आयुक्त एसके सिंह, सहायक नगर आयुक्त रश्मि भारती, मुख्य अभियंता सिविल एसके अम्बेडकर, महाप्रबंधक जल सौरभ श्रीवास्तव, अधिशासी अभियंता सिविल आशीष त्रिवेदी, सहायक अभियंता जलकल प्रेमचंद्र आर्य एवं नगर निगम के पार्षद व अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

समाजसेवी रमेश भैया को 'विनोबा भावे नेशनल अवार्ड'

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने दिल्ली में किया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया विषय पर कैपिटल फाउंडेशन सोसाइटी दिल्ली की ओर से आयोजित सम्मान समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए पश्चिम बंगाल के राज्यपाल डा. सी वी आनंदा बोस ने कहा कि भारत के लोकतंत्र के सफल संचालन में लोक प्रशासन की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। क्योंकि मेरे जीवन का अधिकतर हिस्सा लोक प्रशासन में ही गया है। डा बोस ने कहा कि यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं क्योंकि आज मुझे यहां देश के न्याय, राजनीति, रंगकर्म, व्यवसाय, शिक्षा, स्वास्थय पर्यावरण और ग्राम विकास, समाजसेवा जैसे क्षेत्रों में काम करने वाली प्रमुख हस्तियों को पुरुस्कृत करना है। हर पुरुस्कार एक नए दायित्व का हमें बोध कराता है। प्रशासनिक व्यक्ति को अपनी जवाबदेही याद रखनी चाहिए। प्रख्यात पर्यावरणविद प्रोफेसर के पुरुषोत्तम रेड्डी को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड, राज्यसभा के उपसभापति हरवंश जी को डा भीम राव अंबेडकर नेशनल अवार्ड', आदित्य बिरला ग्रुप के अध्यक्ष कुमार मंगलम बिरला को प्रथम सायरस मिस्त्री अवार्ड, महाराष्ट्र राज्य के लोकायुक्त जस्टिस वी एम कनाडे एवं प्रोफेसर रमेश चंद्र को डा एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड, डा दबिश जैन शिक्षाविद, अरुण जेटली अवार्ड, वरिष्ठ अधिवक्ता नित्या रामकृष्णन को डा आर के जैन अवार्ड, ललित सूरी हिस्पिटलिटी ग्रुप की प्रमुख डा ज्योत्सना सूरी, भारतीय चिकित्सा आयोग के सदस्य डा. जीतू लाल मीना, जलदीप गुप्ता, ऋषभ अग्रवाल तथा गांधी विनोबा सर्वोदय विचार के वाहक विनोबा सेवा आश्रम शाहजहांपुर के संस्थापक रमेश भइया को समाजसेवा के क्षेत्र में विशेष सेवा हेतु 'विनोबा भावे नेशनल अवार्ड से सम्मानित किया गया।' रमेश भइया का संपूर्ण जीवन विनोबा जी के दर्शन के बाद संकल्पित होकर उन्होंने सर्वोदय के विचारों को जन जन तक पहुंचाने के लिए समर्पित किया है। उन्हें इससे पूर्व जनपद रत्न 1999, प्रकृति रत्न अवार्ड लखनऊ 2009, रचनात्मक क्षेत्र में जमनालाल बजाज अवार्ड 2011, रुहेलखंड गौरव अवार्ड 2012, उत्तर प्रदेश सरकार का यश भारती सम्मान 2014, जलपुरुष राजेंद्र सिंह की संस्था तरुण भारत संघ द्वारा नदियों की सुरक्षा हेतु पर्यावरण संरक्षक सम्मान 2016, ए पी एन न्यूज द्वारा राज्य गौरव अवार्ड 2018, स्वामी राम हिमालयन यूनिवर्सिटी द्वारा डा स्वामी राम मानवता पुरुस्कार वर्ष 2021, आदि प्राप्त हो चुके हैं।

इस दौरान विनोबा विचार प्रवाह परिवार के सुधीर गोयल उज्जैन, श्रीभगवान शर्मा दिल्ली डा भारती बुंदेलखंड लोकेश शर्मा उत्तराखंड अनिल बासन दिल्ली यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर डा निशा बाला त्यागी जमनालाल बजाज पुरस्कार से सम्मानित विमला बहन, राष्ट्रीय सचिव हरिजन सेवक संघ श्री संजय राय उपस्थित रहे।

महर्षि पतंजलि जयन्ती सीएमओ ने किया प्रशिक्षकों को सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। योग विज्ञान संस्थान के तत्वावधान में महर्षि पतंजलि की जयन्ती मनाई गई। सीतापुर नेत्र चिकित्सालय में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सीएमओ डॉ आरके गौतम ने कहा कि आज के समय में योग हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। क्योंकि यही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति सहज व स्वस्थ जीवन जी सकता है। विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय आयुर्वेद एवं यूनानी अधिकारी डॉ राजीव कुमार ने स्वस्थ जीवन के लिए सभी से योग से जुड़ने की अपील की। इस मौके पर संस्थान की जिला महिला योग प्रमुख ज्योति गुप्ता व अन्य प्रशिक्षकों ने विभिन्न आसनों का अभ्यास भी कराया। आयोजन में मुख्य अतिथि डॉ आरके गौतम, विशिष्ट अतिथि डॉ राजीव कुमार, संकल्प संस्था अध्यक्ष हिमान्शु पाराशरी व महासचिव विजय तुली ने विश्व योग दिवस पर विभिन्न स्थानों पर योग साधना कराने

वाले संस्थान के प्रशिक्षकों गीता पाण्डेय, संध्या गुप्ता, सौरभ गोयल, रचना चांदना, विपिन रस्तोगी, जवाहर लाल रस्तोगी, डॉ राजेन्द्र कुशवाहा, राजेश दीक्षित, अनामिका अवस्थी, अर्चना दीक्षित, प्रमोद पाण्डेय व प्रवीण मिश्रा को सम्मानित किया। कवि डॉ इन्दु अजनबी के संचालन में हुए समारोह में डॉ पुष्पा कुमारी, डॉ जगपाल सिंह, राजवीर सिंह यादव, आरपी सक्सेना, राकेश मिश्र, एनसी त्यागी, ललित मोहन, मधुबाला, राजकुमारी वर्मा, सतवंत कौर मोंगा, डॉ सारिका अग्रवाल, निशा बरनवाल, मधु सक्सेना, उमा देवी, सावित्री, गीता, कमला, सुमन, अनीता शुक्ला, ऊषा कश्यप, डॉ संजय सक्सेना, वेदप्रकाश गुप्ता, आशाराम गुप्ता, अशोक रस्तोगी, मिथलेश त्यागी, रामेन्द्र मिश्रा, आदेश दीक्षित, अनीता पाराशरी, विनोद सिंह व तराना जमाल समेत अनेक लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन डॉ अवधेश मणि त्रिपाठी ने प्रार्थना के साथ किया।

इतिहास बनने की कगार पर शाहजहांपुर कैंट

डा. विकास खुराना

शाहजहांपुर कैंट अब अतीत की विषयवस्तु होने जा रही है। कदाचित हम लोगो की पीढ़ी वो अंतिम पीढ़ी है जो अंग्रेजो द्वारा स्थापित इस कैंट को न केवल देख पाई बल्कि यहां की हरियाली,पक्षियों की चहचाहट को महसूस कर सकी। उत्तरप्रदेश के नगरीय क्षेत्रों में जैसा अनियोजित विकास कार्य है उसे देखकर यही लगता है कि शीघ्र ही शाहजहांपुर शहर इस प्राकृतिक सौम्यता से विरक्त हो जायेगा। एतिहासिक रूप से शाहजहांपुर में मिलिट्री स्टेशन एक गैरिसन के रूप में उसी वर्ष 1814 में अस्तित्व में आ गया था जिस वर्ष शाहजहांपुर जिला बना।सैन्य अधिकारियों के लिए ब्रिटिश स्ट्रचर के अनेक बंगले यहां बने जो आज भी हैं।इन बंगलो की वास्तु में इनके चारों ओर हरित आवरण,खपरैलदार छतों का मेहराबदार होना,ईंटो की चिमनी,खुले एवं बड़े सहन,ऊंचे रोशनदान इत्यादि है जो गर्मी में ठंडे और ठंड के दिनों में पर्याप्त रूप से गर्म रहते थे। आर्मी स्टेशन अपने प्राकृतिक परिवेश में एक बड़े उघान का प्रतिनिधित्व करता है।वर्ष 1835 में इस क्षेत्र के रहने वाले सिविल लोगो के लिए एक कैंट बोर्ड बनाया गया।जिसका वार्षिक बजट छह हजार रुपए था।सन 1857 की क्रांति के बाद यहां ब्रिटिश रेजीमेंट्स की संख्या बढ़ाई गई,1900 के वर्ष गैरिसन खत्म होने का वर्ष था किंतु शीघ्र ही बोअर युद्ध कैदियों की सुरक्षा के लिए यहां पुन: अंग्रेजी रेजीमेंट्स स्थापित हुई।वर्ष 1835 में जिला मैजिस्ट्रेट बेलिर ने यहीं से सामुदायिक वानिकी की शुरुआत की थी जब उन्होंने पहाड़ से टीक, कार्क इत्यादि पौधे मंगवाकर यहाँ लगवाए।वर्ष 1837 में इस इलाके में कलकत्ता मिशनरी बिशप हर्पर की मदद से यहां सेंट मेरी चर्च अस्तित्व में आई।इस चर्च की प्रशंसा तारीखी किताबो में विश्व की प्राकृतिक चर्चो में होती थी। जनरल एकाउंट्स आफदी डिस्ट्रिक्ट के अध्याय पांच के अध्ययन पता चलता है कि उस समय यह पूरा क्षेत्र वृक्षों से भरा हुआ था कि सेंट मेरी चर्च की छत पर अगर खड़े हुआ जाए तो दिखता कुछ नही था। कैंट की ज्यादातर सड़को के नाम ब्रिटिश गवर्नर जनरल के नाम पर अंग्रेजी ही थे।इतने वर्षो बाद आज भी यह पूरा क्षेत्र जैव विविधता के क्षेत्र में अग्रणी है जिसके पास ही खन्नौत की सुरम्य घाटी है। अनेक तरह के वृक्ष,चिड़िया इत्यादि इसे नायाब बनाती है। ब्रिटिश कालीन बंगलो अभी भी यहां बहुतायत में है। आर्डिनेंस क्लोथिंग फैक्ट्री की इमारत पहले कमिश्नरेट गोदाम के रूप में उपयोग होती थी, यही पुरानी जेल भी थी जिस पर प्रख्यात मौलवी अहमद उल्लाह शाह ने नौ दिन तक तोप से गोलाबारी की थी। कैंट में ही जनपद का महाज्यमितीय स्तंभ लगा है जहां से जिले का त्रिज्यमितीय सर्वे संपन्न हुआ था। अब भारत सरकार का निर्णय है कि कैंट क्षेत्र को निगम में शामिल किया जाए, इसके परिणाम क्या रहेंगे, यह आने वाला वक्त ही बताएगा लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि इस पूरे क्षेत्र ने नगर वासियों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सम्पादकीय

नफरत पर नकेल समाज को भी निभानी होगी जिम्मेदारी

किसी दूसरे मजहब या व्यक्ति के खिलाफनफरती बयान या भाषण देना अब भारी पड़ सकता है। सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसे लोगों के खिलाफसख्त कार्यवाही करने व उन पर नजर रखने के लिए एक सिस्टम बनाने को कहा है उच्चतम न्यायालय ने एक बार फिर नफरती भाषणों पर नकेल कसने को लेकर सरकार और प्रशासन की जिम्मेदारी रेखांकित की है। अदालत ने कहा है कि ऐसे भाषणों और अपराधों पर नजर रखने के लिए एक तंत्र बनाया जाए। अदालत ने कहा कि नफरत आधारित अपराध और नफरती बयान पूरी तरह अस्वीकार्य हैं।

अभी कुछ दिन पहले देष के विभिन्न क्षेत्रों में फैली हिंसा और नफरती बयानों तथा भाषणों के संदर्भ में दायर अपील पर उसने ताजा टिप्पणी की है। अदालत ने कहा है कि पुलिस महानिदेशकों को निर्देश दिया जाएगा कि वे एक ऐसी समिति बनाएं, जो अलग-अलग इलाकों के थाना प्रभारियों से प्राप्त नफरती बयान संबंधी शिकायतों पर गौर करके उनकी सामग्री की जांच करें और पुलिस अधिकारियों को निर्देश जारी करें। हालांकि यह पहला मौका नहीं है, जब सर्वोच्च न्यायालय ने पुलिस को इस संबंध में चौकस रहने को कहा है। दिल्ली दंगों, विधानसभा चुनावों के दौरान और फिर उत्तराखंड तथा देश के अन्य हिस्सों में आयोजित धर्म संसदों में जब नफरती भाषणों को लेकर गुहार लगाई गई थी, तब भी न्यायालय ने पुलिस की जिम्मेदारी याद दिलाई थी। पिछले कुछ वर्षों से जिस तरह समुदाय विशेष के प्रति नफरत भरे भाषण देकर लोगों में उत्तेजना पैदा करने की कोशिशें तेज हुई हैं और इसके चलते अनेक जगहों पर हिंसा का माहौल बना है, उससे धार्मिक और सामाजिक सौहार्द काफी बिगड़ा है। जबकि संवैधानिक तकाजा है कि किसी भी समुदाय की धार्मिक स्वतंत्रता पर चोट नहीं की जा सकती, मगर पुलिस ज्यादातर मामलों में हाथ पर हाथ धरे देखी गई है।

जिन मामलों में सर्वोच्च न्यायालय ने पुलिस को सख्त निर्देश दिए, उनमें भी जांच और कार्रवाइयों आदि को लेकर उसका व्यवहार शिथिल ही देखा गया है। ऐसे में कहना मुश्किल है कि न्यायालय के ताजा निर्देश पर पुलिस कितनी निष्पक्षता और सख्ती बरत पाएगी। पुलिस की शिथिलता और सख्ती से बचने के प्रयास की वजहें स्पष्ट हैं। सरकारों ने उसके हाथ बांध रखे हैं। फिर जहां खुद सत्तापक्ष के नेता भड़काऊ और नफरती बोल बोलते देखे जाते हैं, वहां छुटभैये नेताओं और कार्यकर्ताओं से भला कितने अनुशासन की अपेक्षा की जा सकती है? अब यह भी छिपी बात नहीं है कि राजनीतिक दल अपना जनाधार बढ़ाने के मकसद से उपद्रवी तत्त्वों को उकसाते हैं।

यह संकीर्णता केवल किसी समुदाय विशेष के प्रति विष वमन तक सीमित नहीं है। जो दल जाति की राजनीति करते हैं, वे भी किसी न किसी रूप में नफरती भाषणों का सहारा लेते देखे जाते हैं। हालांकि समाज का प्रबुद्ध तबका राजनीतिक दलों की इन चालबाजियों को समझता है, मगर उसके प्रयास इतने कमजोर साबित होते हैं कि उपद्रवी तत्त्व अपनी योजनाओं में कामयाब हो जाते हैं। ऐसे में नजर आखिरकार पुलिस पर जाकर टिकती है, जिसकी जिम्मेदारी सामाजिक विद्वेष पैदा करने की कोशिशों पर अंकुश लगाने और नफरत का माहौल खत्म करने की है लेकिन सामाजिक समरसता को बनाए रखने के लिए हम केवल पुलिस पर ही निर्भर नहीं रह सकते। समाज के प्रबुद्ध वर्ग को भी आगे आना होगा और उसे सांप्रदायिक और सामाजिक सौहार्द बनाए रखने के लिए अपनी भूमिका को बखूबी निभाना भी होगा तभी हम एक शांति प्रिय राष्ट्र की परिकल्पना को साकार कर सकेंगे।

चिंता कब बन जाए चिता

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

चिंता का अर्थ क्या है? हम अपनी दैनिक दिनचर्या में किसी न किसी वजह में उलझकर चिंता को आवागमन का निमंत्रण देते रहते हैं बिना यह समझें कि उसके परिणाम क्या है और यह हमारे शरीर को कितना नुकसान पहुंचा रही है। चिंता का अर्थ ही है स्वयं व मन पर बोझ और जब किसी बोझ की गठरी को निरंतर हम ढोते रहेंगे तो जीवन बोझिल होना लाजिमी है। कृष्ण ने महाभारत के युद्ध के दौरान अर्जुन से कहा था 'तुम कर्ता नहीं हो, तुम निमित्त मात्र हो करने वाला और कराने वाला भी एक ही है, जिसे मारना है वह मार लेगा, जिसे नहीं मारना वह नहीं मारेगा, तुम बीच में मत आओ,तुम बस साझी भाव से अपने कर्म का पालन करो यही नियति है।' ठीक इसी प्रकार जीवन चक्र में हर मनुष्य की नियति निश्चित है, नाते रिश्ते जो इस जीवन में प्राप्त है वो सिर्फमाध्यम है जीवन चक्र की क्रियाओ को सुचारू रूप से सहयोग करने के लिए, हमारी चिंता सिर्फहमारे जीवन की समस्यायों को बढ़ाने में ही भागीदारी निभा सकती है इससे न तो जिसके लिए चिंता की जा रही है उसकी गति पर इसका कोई प्रभाव पड़ेगा न कोई समस्या हल होगी। 'जा घट चिंता नागिनी तह मुख जप नहिं होय।' और जब तक चिंता है तबतक जप ध्यान भी नहीं हो सकता है, क्योंकि चिंता बार बार मन की एकाग्रता भंग करने आती रहेगी। आपने महसूस किया होगा जब भी जीवन में चिंता या परेशानी घर करने लगती है तो हम अपने दैनिक दिनचर्या के कार्यों को भी बेहतर तरीके से पूर्ण करने में असमर्थ हो जाते साथ ही कई बार ये चिंता इतनी वृहद हो जाती है जिससे हमारा जीवन भी अस्त-व्यस्त हो ने लगता है, और शनै शनै यह इतना विकराल रूप ले लेती है कि इसकी वजह से कई तरह के मानसिक रोगों से भी शरीर ग्रस्त हों जाता है। इतना ही नहीं मन इतना व्याकुल हो जाता है कि अतीत के संबंधों के बारे में सोच सोच कर वर्तमान भी खराब करने लगते है, ऐसा क्यों कर लिया, ऐसा क्यों नहीं किया ऐसा कर

लिया होता तो अच्छा होता ऐसे व्यर्थ के विचार से, जो अतीत हाथ से जा चुका है, जिसके लिए अब कुछ किया भी नहीं जा सकता न कोई सुधार न संशोधन होना मुमकिन है हम उन सब में ही उलझे पड़े हैं परंतु आज की स्थिति को समझ कर सुधार, संशोधन के साथ भविष्य को बेहतर बनाने के लिए प्रयास किए जा सकते हैं और हम उस समय को व्यर्थ ही गंवा रहे हैं। कुछ लोग अतीत में ही खोए रहते हैं और उसके विश्लेषण से चिंतित रहते हैं जैसे काश विवाह कर लिया होता,काश उस स्त्री से विवाह किया होता तो ज्यादा अच्छा जीवन हो जाता, काश फलां व्यक्ति ने अड़चनें न डालीं होती तो जीवन ज्यादा सुखमय हो गया होता, मेरे दुःख का कारण फलां है आज उसकी वजह से मेरी जिंदगी खत्म हो गई ऐसे अनगिनत दोषारोपण, कहीं भी स्वयं का बोध नहीं, कहीं भी स्वयं के प्रति जागरूकता नहीं बस चिंतन चिंतन और इससे उत्पन्न चिंता। अतीत की चिंता तो बिल्कुल ही व्यर्थ है क्योंकि जो हो ही चुका है अब उसकी क्या चिंता। और भविष्य की चिंता भी व्यर्थ है क्योंकि अभी जो हुआ ही नहीं है उसकी क्या चिंता। हमारे हाथ में सिर्फहमारा वर्तमान है अगर आज बेहतर है तो अतीत स्वथाह ही बेहतर पलों की यादों के रूप में याद आएगा और आज के समय का उपयोग सही तरीके से किया गया है तो वह भविष्य को सुरक्षित और बेहतरीन स्वथाह ही बना देगा फिर चिंता कर कर के इस शरीर को क्यों कष्ट दिया जा रहा है, क्यों न एक प्रयास आज के लिए करें, स्वीकार करें स्वयं को और जो जैसा है वैसा ही दुसरो को रहने दें, क्योंकि हम किसी के भाग्य विधाता नहीं है सब अपने कर्मों का लेखा जोखा लेकर आए हैं और उसके अनुसार ही उनका जीवन निश्चित है व्यर्थ के प्रयास सिर्फमन को और शरीर को कष्ट दे सकते हैं उससे किसी का भला नहीं होगा, परंतु इस तरह की चिंता हमारे लिए मृत्यु के द्वार जरुर खोल देगी, जीवन एक है और हर व्यक्ति अपने जीवन के कार्यों के लिए जिम्मेदार है चयन हमें करना है हमारे लिए प्राथमिकता स्वयं के मन, आत्मा और शरीर की होनी चाहिए या अन्य के मन, आत्मा शरीर की जहां हम चिंता कर के न स्वयं का भला करेंगे न उसका जिसके लिए चिंतित हैं।

So let's start and live in now---

अंतरिक्षः बढ़ते कदम और प्रकट होती संभावनाएं

शिशिर शुक्ला

विगत 14 जुलाई को चंद्रयान-3 मिशन के रूप में भारत ने चंद्रमा की ओर एक नई यात्रा की शुरुआत की। इससे पहले भी वर्ष 2008 एवं वर्ष 2019 में क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय चंद्रयान मिशन के द्वारा भारत ने संपूर्ण विश्व को यह बता दिया कि अब हमारे कदमों में भी चांद तक का सफर तय करने की सामर्थ्य आ चुकी है। चंद्रयान-1 मिशन के द्वारा एक बेहद महत्वपूर्ण जानकारी प्रकाश में आई थी कि चांद पर कभी पानी मौजूद था। चंद्रयान-2 दुर्भाग्यवश लैंडिंग के दौरान हादसे का शिकार हो गया एवं मिशन अपूर्ण रह गया। इस अधूरे मिशन का बीड़ा उठाते हुए चंद्रयान-3 ने चांद की ओर उड़ान भरी है। यहां पर एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि चंद्रयान-1 से हमें चंद्रमा के विषय में जानकारी तो मिली किंतु उस मिशन में चंद्रमा की सतह से सूचनाएं एकत्र करने का तरीका चंद्रयान-2 एवं चंद्रयान-3 से सर्वथा भिन्न था। चंद्रयान-1 मिशन में एक उपकरण मून इंपैक्ट प्रोब को चांद के दक्षिणी हिस्से पर गिराया गया था जबकि चंद्रयान-3 में चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग होनी है। यह व्यवस्था चंद्रयान-2 में भी थी किंतु लैंडिंग करते वक्त रोवर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। चंद्रयान-3 23 अगस्त को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में सॉफ्ट लैंडिंग करेगा। सॉफ्ट लैंडिंग सफल होते ही भारत भी अमेरिका, रूस एवं चीन के बाद चांद पर लैंडर उतारने वाला विश्व का चौथा देश बन जाएगा। इस मिशन के साथ एक खास बात यह है कि चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव की ओर रवाना होने वाला यह विश्व का प्रथम मिशन है। लेकिन हमारा मिशन चांद के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडिंग करने वाला विश्व का प्रथम मिशन बन पाएगा अथवा नहीं, इस विषय में पूर्ण निश्चितता के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। इसका कारण यह है कि रूस ने भी 11 अगस्त को अपना मून मिशन लूना-25 लांच किया है। गौरतलब है कि चंद्रयान-3 की तुलना में लूना-25 बेहद शक्तिशाली प्रक्षेपण रॉकेट से सम्बद्ध है जिस वजह से लूना-25 को पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र को पार करके चंद्रमा की कक्षा में स्थापित होने में महज एक सप्ताह का समय लगा, जबकि चंद्रयान-3 को पृथ्वी की कक्षा छोड़कर चांद की ऑर्बिट पकड़ने में 22 दिन का समय लग गया। यहां पर उल्लेखनीय है कि निस्संदेह भारत के द्वारा चंद्रमिशन हेतु अथक परिश्रम करते हुए एक अच्छा खासा समय खर्च किया गया। किंतु तकनीक के मामले में अभी हम कहीं न कहीं रूस के मुकाबले पीछे खड़े हैं। तकनीक का यह अंतर लूना-25 एवं चंद्रयान-3 की तुलना करते हुए स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

जैसा कि सर्वविदित है कि पृथ्वी से चांद तक की यात्रा में चंद्रयान-3 के लिए चालीस दिन का समय निर्धारित है जबकि लूना-25 के द्वारा यही यात्रा दस दिन में पूरी कर ली जाएगी। वजह यह है कि लूना-25 अपनी यात्रा हेतु एक बेहद शक्तिशाली रॉकेट सोयुज पर सवार है जबकि चंद्रयान-3 के साथ इतनी क्षमतायुक्त व्यवस्था नहीं है। रूस के पास मौजूद प्रक्षेपण रॉकेट इस हद तक

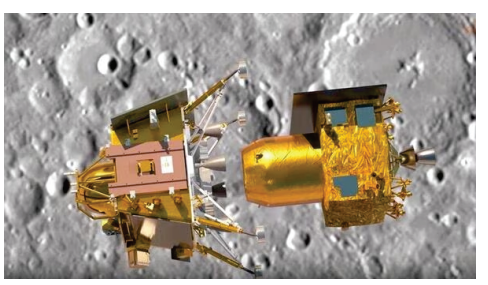

सक्षम हैं कि उसके चंद्रमिशन को चंद्रमा तक पहुंचाने के लिए इतनी ऊर्जा व संवेग प्राप्त हो जाता है कि वह सीधे मार्ग का अनुसरण करते हुए चंद्रमा की कक्षा में स्थापित हो सकता है। दूसरी ओर भारत के स्पेसक्राफ्ट को स्लिंग शॉट तकनीक के जरिए चंद्रमा की कक्षा में स्थापित किया जाता है। इसे हम एक व्यावहारिक उदाहरण से समझ सकते हैं। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे कि एक पत्थर को किसी डोरी से बांधकर उसे बंद पथ में बार-बार घुमाना एवं प्रत्येक घुमाव के बाद पथ को बड़ा करते हुए अंत में उसे लक्ष्य की ओर छोड़ देना। इस प्रक्रिया में पत्थर अभिकेंद्र बल का सहारा लेते हुए ऊर्जा प्राप्त करता है और धीरे-धीरे उसकी कक्षा बड़ी होती जाती है। चंद्रयान-3 में भी पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल से जनित अभिकेंद्र बल का उपयोग करते हुए उसे उत्तरोत्तर बड़े आकार की अर्थ आर्बिट में घुमाया गया एवं अंत में उसे पर्याप्त ऊर्जा देकर पृथ्वी से पलायन कराते हुए चंद्रमा की कक्षा में स्थापित किया गया। दूसरा विकल्प यह होता है कि पृथ्वी के चक्कर कम काटने पड़ें एवं सीधा चंद्रमा की कक्षा में प्रविष्ट हुआ जाए, जोकि तभी संभव है जबकि प्रक्षेपणयान पर्याप्त शक्तिशाली हो। फिलहाल हमारी रॉकेट तकनीक इतनी उन्नत दशा में नहीं है, लिहाजा हम लंबे व घुमावदार मार्ग का अनुसरण करने के लिए बाध्य हैं।

बहरहाल लैंडिंग चाहे चंद्रयान-3 की पहले हो अथवा लूना-25 की, दोनों के साथ अनेक लक्ष्य एवं स्वप्न जुड़े हुए हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चंद्रयान-3 चंद्रमा के दक्षिणी /द्य5ह्वव पर उतरेगा जोकि भौगोलिक रूप से विषमतापूर्ण एवं अद्भुत क्षेत्र है। सूर्य की रोशनी सीधे पड़ने के कारण यहां का तापमान अपेक्षाकृत अधिक रहता है। चांद की सतह पर रोवर प्रज्ञान चौदह दिन तक अपना अनुसंधान कार्य करेगा जबकि लूना-25 मिशन की अवधि एक वर्ष है। जैसा कि चंद्रयान-1 मिशन से जानकारी मिली थी कि चंद्रमा पर कभी पानी की मौजूदगी थी। इस तथ्य की सत्यता की जांच हेतु चंद्रयान-3 चंद्रमा पर मौजूद गड्ढों एवं चट्टानों को बारीकी से परखकर यह बताने का प्रयास करेगा कि चांद पर बर्फयुक्त पानी की उपस्थिति की बात कितने फीसदी सच है। इसके अतिरिक्त एक अन्य बेहद महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि चंद्रमा पर हीलियम-3 की उपस्थिति की अपार संभावनाएं हैं। हीलियम-3 ऊर्जा का एक असीमित व अतुलनीय स्रोत है। यदि किसी प्रकार भविष्य में हीलियम-3 को चंद्रमा से पृथ्वी तक लाना संभव हो सका, तो संपूर्ण विश्व की ऊर्जा आवश्यकता हेतु एक उत्तम आपूर्तिस्रोत उपलब्ध हो जाएगा। चंद्रमा पर पृथ्वी से 1 गुना ज्यादा हीलियम-3 विद्यमान है। मैग्नीशियम, सिलिकॉन, पोटेशियम, कैल्शियम, टाइटेनियम, आयरन, अल्युमिनियम जैसी धातुओं एवं अन्य बहुमूल्य खनिजों की मौजूदगी का पता लगाना भी चंद्रयान-3 के उद्देश्यों में शामिल है। कुल मिलाकर यह मिशन हमारे लिए भविष्य की एक आशाकिरण है। इसकी सफलता निश्चित रूप से भारत की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विस्तार एवं विश्वपटल पर भारत के कद की बढ़त के द्वार खोलेगी। अमेरिका के प्यू रिसर्च सेंटर की एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार अब वह दिन दूर नहीं है जबकि अंतरिक्ष की सैर एक लोकप्रिय पर्यटन हो जाएगा। धरती की यात्रा वास्तव में समय तालिका के पैमाने पर बहुत छोटी हो चुकी है क्योंकि परिवहन के साधनों ने विकास के उन्नतोन्नत आयामों को स्पर्श कर लिया है। यद्यपि अंतरिक्ष पर्यटन का सपना साकार होने में कई दशक लगेंगे किन्तु इसमें कोई दो राय नहीं है कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए चांद व मंगल की सैर एक आम बात होगी।

आध्यात्मिक ऊर्जा संयमः खलु जीवनम

सूर्यदीप कुशवाहा

संयम महान -चरित्र का बहुत बड़ा गुण है। अति क्रोध की स्थिति में भी बिना क्रुद्ध हुए अपना कार्य संतुलित दृष्टिकोण के साथ करते जाना मनुष्य की महानता का द्योतक है। जो मनुष्य स्वयं को संयमित नहीं रख सकता, जिसका स्वभाव उसकी इच्छा के विरुद्ध परिवर्तित होता रहता है, वह एक निर्बल व्यक्ति है और परीक्षा की घड़ी में भी वह निर्बल सिद्ध होगा। जो मनुष्य स्वयं को संयत नहीं रख सकता, वह उस नाविक के समान है जिसके पास कंपास न हो, हवा उसे जिधर चाहे ले जाए। क्रोध का प्रत्येक झोंका और विचार की प्रत्येक तरंग उसे इधर-से-उधर ले जाती है और उसके लिए अपनी मंजिल पर पहुँचना कठिन हो जाता है। जो मनुष्य अपने मुख और जिह्वा पर संयम रखता है, वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है। यदि हमारे विचार संयत हैं, हम अपनी मानसिक क्रियाओं को नियंत्रित कर सकते हैं तो हम जीवन में किसी भी परिस्थिति का सामना करने में समर्थ हैं। संयम मनुष्य की विपत्तियों से रक्षा करता है। संकट की घड़ी में उचित निर्णय संयत व्यवहार से ही संभव है।

संयम से मनुष्य क्षीर, गंभीर बनता है और निर्णय लेने में कोई गलती नहीं करता। मनुष्य के स्वाभाविक विकार भी इससे दूर होते हैं। धर्म के पालन में इससे स्थिर बुद्धि का संचालन होता है। ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, क्रोध का शमन भी इसके द्वारा संभव हो सकता है। अगर किसी को दो रोटी खाने से संतोष की प्राप्ति होती है तो उसके सामने चाहे कितने भी पकवान रख दिए जाएं लेकिन वह उनकी तरफनजर भी उठाकर नहीं देखेगा क्योंकि दो रोटी से उसे संतोष मिल चुका है तो उसके लिए बाकी पकवान बेकार है और यही संयम की निशानी है। जिस इंसान की रोजमर्रा की जरूरतें पूरी हो जाती है और वह उससे संतुष्ट है तो उसमें संयम का भाव अपने आप आ जाता है क्योंकि उसको काम क्रोध लोभ अहंकार जैसे शत्रु, जो कि किसी का भी जीवन नष्ट करने के लिए काफी है, उन से डरने की जरूरत नहीं पड़ती है. संयम इतना ताकतवर अस्त्र है जिसके आगे यह सब शत्रु निर्बल पड़ जाते हैं और उस इंसान का वह कुछ नहीं कर पाते है।

एक बार बुद्ध मौन व्रत का पालन करते समय एकाग्रचित बैठे हुए थे। उनसे द्वेष रखने वाला एक कुटिल व्यक्ति उधर से गुजरा। उसके मन में ईर्ष्या भाव पनपा-उसने वृक्ष के पास खड़े होकर बुद्ध के प्रति अपशब्दों का उच्चारण किया। बुद्ध मौन रहे। उन्हें शांत देखकर वह वापस लौट आया। रास्ते में उसकी अंतरात्मा ने उसे धिक्कारा- एक शांत बैठे साधु को गाली देने से क्या मिला? वह दूसरे दिन पुनः बुद्ध के पास पहुंचा। हाथ जोड़कर बोला, 'मैं कल अपने द्वारा किए गए व्यवहार के लिए क्षमा मांगता हूं।' बुद्ध ने कहा, 'कल जो मैं था, आज मैं वैसा नहीं हूं। तुम भी वैसे नहीं हो। क्योंकि जीवन हर पल बीत रहा है। नदी के एक ही पानी में दोबारा नहीं उतरा जा सकता। जब वापस उतरते हैं, वह पानी बहकर आगे चला जाता है। कल तुमने क्या कहा, मुझे नहीं मालूम। और जब मैंने कुछ सुना ही नहीं, तो वे शब्द तुम्हारे पास वापस लौट गए।' बुद्ध के शब्दों ने उसे सहज ही वाणी के संयम का महत्व बता दिया।

संयमी व्यक्ति शांत और प्रसन्न स्वभाव का होता है। वह अपना जीवन हंसी खुशी और सुख से व्यतीत करता है। कोई भी समस्या आने पर वह उसको शांति से सामना करता है और उसका हल निकालता है। उसके मन में ज्यादा उथल-पुथल नहीं होती है। संयमन्न खलु जीवनम जीवन की यथार्थता संयम की सुदृढ़ भूमिका पर आधारित है। सुरम्य प्रासाद तभी सुखदायी होगा, जब उसकी नींव सुदृढ़ होगी। वृक्ष तभी स्थिर रहेगा, जब उसकी जड़ मजबूत होगी। ठीक उसी प्रकार संयम भी मानव जीवन का मूल मंत्र है और उसकी नींव है।मनोसंयम का अर्थ है- मन की दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाना। इसका अभिप्राय यह है कि मन एक मस्त गजराज के समान है, उसका अंकुश संयम है और इस अंकुश का महावत हमारी आत्मा है।

मिलकर ढाई आखर गाएँ

मन:पटल पर मार कुण्डली,
बैठी हैं अगणित कुण्ठाएँ।
पूजन हित ये नहीं कदाचित,
निष्ठा की खण्डित प्रतिमाएँ।
मस्त मगन हो निज वैभव में,
नाचे सुविधाभोगी काया।
नैतिकता को क्या समझेगी,
महिमामंडित कलुषित माया।
सतपथ को बाधित करती हैं,
ये उन्मादी अभिलाषाएँ।
पगडण्डी को छोड़ उपज को,
कुचलेगी जब वैचारिकता।
निर्णय यदि निष्पक्ष न होंगे,
निश्चित भुगतेगी मानवता।
फिर सर्वेभवन्तु सुखिन: सी,
फलित न होंगी कभी ऋचाएँ।
समता-समरसता के सुख में,
सुनते हैं सर्वस्व निहित है।
आयु नफरतों की छोटी है,
लेकिन प्रेम नहीं सीमित है।
द्वेष भाव की कारा तोड़ें,
मिलकर ढाई आखर गाएँ।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

तुमको गीतों में गाकर

कुछ-कुछ खुद को बहलाकर।
अपने दिल को समझाकर।
अक्सर हम सो जाते हैं,
तुमको गीतों में गाकर।
याद तुम्हारी जब आए।
चेहरे पर रौनक छाए।
तन मन भीग गया अपना,
सावन के नगमे गाए।
बातें होती हैं अक्सर,
तुमको सपने में पाकर।
सुनो पुकारो बस मुझको।
फक्त निहारो बस मुझको।
दुनिया भर की मत सोचो,
सिर्फ सँवारो तुम मुझको।
अक्सर तिरछी नजरों से,
रख देते हो तड़पाकर।
प्यार मोहब्बत की बातें।
शीत लहर सी सौगातें।
पल भर में कट जाती थीं,
लम्बी-लम्बी सी रातें।
आँखें नम हो जाती हैं,
बीते लम्हें दोहराकर।

विकास सोनी 'ऋतुराज'

सावन की बरसी बदरी

सावन की बरसी बदरी
यादों के ठूंठ हरियाए
सब याद बहुत आये..
बाबुल का गाँव
निमिया की छाँव
बतरस का ठाँव
कागज की नाँव
हौले हौले चली जाए
सब याद बहुत आये...
सखियों का साथ
मंदिर का पाथ
गौरा के नाथ
मेंहदी के हाँथ
खन खनन खनन खनकाती
सब याद बहुत आये...
सावन के गीत
थी जिनसे प्रीत
बिछुड़े वो मीत
थी जिनसे प्रीत
बिटिया पी के घर जाये...

सुमन पाठक

शहरी सखी की दारूण कथा

अयोध्या प्रसाद

किसी गांव में दो सखियां रहती थीं। उनमें आपस में बड़ी घनिष्ठता थी । वे सभी बातें एक दूसरे से शेयर करती रहती थीं । एक की शादी सुदूर गांव में एक पढ़े लिखे किसान से हो गई। दूसरी की शादी राजधानी के एक सरकारी क्लर्क से। गांव वाली सखी अपनी गृहस्थी के साथ खेत, क्यारी में अन्न और सब्जियां उगाने और समय समय पर पड़ने वाले तीज त्योहारों को मनाते में व्यस्त रहती और सीमित संसाधनों में गुजर बसर कर लेती। उसे शहरी रहन सहन, चकाचौंध भरी जिंदगी बहुत आकर्षित करती और वह उसके लिए तरसती रहती। लेकिन शहरी सखी हमेशा दुखी ही रहती । उसे गर्मियों में बिजली की अनिश्चित कटौती बहुत तंग करती, बहुमंजिला मकान के बगल में बसे होने से जाड़े में पर्याप्त धूप नहीं मिलती, लाख जतन करने के बाद भी मच्छर जीना दूभर कर देते । बरसात के दिनों में तो उसका बुरा हाल हो जाता। शहरी सखी गांव के प्रदूषणमुक्त वातावरण की दुहाई देती और शहर में शादी होने को लेकर अपने भाग्य को कोसती रहती। असंतुष्टि का स्तर दोनों सखियों का बराबर था। दोनों में फोन पर एक दूसरे से प्राय: बात होती रहती लेकिन अपने मन की पीड़ा बयान करने के लिए एक दिन शहरी सखी ने एक पत्र लिखा और गांव वाली सखी को वाट्सऐप पर भेज दिया। पत्र कुछ इस प्रकार था। प्यारी सखी ! सावन के महीने में भी यहां न तो पवन शोर कर रहा है और न ही जियरा को झूमने का कोई कारण ही बन पा रहा है । बरसात आने के बहुत पहले नाले, नालियों में जमी गंदगी को निकालने का प्रशंसनीय कार्य हुआ था और उसे निकालकर वहीं कहीं आसपास ही ढेर कर दिया गया था। उसे उठा कर समुचित जगह पहुंचाने वाले कर्मचारी आला दर्जे के दगाबाज निकले। उन्होंने उसे उठाने तो क्या, उधर देखने तक की जहमत नहीं उठाई। फलस्वरूप वो गंदगी और कीचड़ के ढेर कुछ दिन तक कुढ़ कुढ़ कर वहीं सूखते रहे और फिर जहां से निकले थे, वहीं समा गए ।

बादल विजयी सभासद की तरह आवाजाही करते रहते हैं। भूले बिसरे जब कभी मन करता है, बरसने लगते हैं। उनके बरसते ही मुहल्ले की सड़कें जो टूट कर कई जगहों पर गड्ढों में तब्दील हो चुकी हैं और पिछले एक दशक से निर्माण की बाट जोह रही हैं, गंदे पानी, कीचड़ से भर जाती हैं। नालियों और सड़कों में कोई भेद नहीं रह जाता है। दोनों गलबहियां करने लगती हैं। पानी की निकासी न होने से ज्यादा बारिश होने पर अक्सर पानी घरों में घुस जाता है, जिसे नगर निवासी उलीच कर बाहर फेंकते हैं।

शहर में नई नई जो सड़कें बनी भी हैं, वो कब और किस स्तर तक गिरकर कितना धंस जाएंगी और कितनी गहराई को प्राप्त हो जाएंगी, कुछ कहा नहीं जा सकता। अखबारों में उनकी फोटो देख देखकर जियरा डरा सहमा रहता है। हमने तो अपने उनको कह दिया है कि दिन के उजाले में ही घर पहुंच जाया करो। पता नहीं कौन सड़क कब धंस जाए। दिन के उजाले में गड्ढे में गिर पड़ने पर कोई न कोई देख तो लेगा। बिजली तो छैल छबीली की तरह आती है और चाहे जब, चली जाती है। घरों में ऐसी और कूलरों की भरमार की वजह से आए दिन ट्रांसफारमर फुंकते रहते हैं। ...घंटो घंटों बिजली की कटौती से जीना दुश्वार हो गया है। पीने और घरेलू इस्तेमाल के पानी के लिए वाटर सप्लाई पाइपलाइन का ही सहारा है। कभी कभी पानी सप्लाई के समय बिजली नहीं रहती तो पानी के लिए भी तरसना पड़ता है। तुम्हें विश्वास नहीं होगा, कभी कभार तो नल के पानी से गंदा बदबूदार पानी आता है। घर घर कूड़ा उठाने के लिए कर्मचारी कई कई दिन तक नहीं आता जिससे डस्टबिन में रखा कूड़ा सड़कर पूरे घर को दुर्गन्धमय बना देता है।

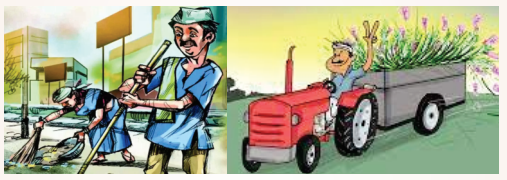

सखी, सब्जियों के दाम आसमान छू रहे हैं। टमाटर के लाल तेवर से तो सभी परेशान हैं। मजबूरन पीस के हिसाब से खरीदना पड़ रहा है! उसकी देखादेखी दूसरी सब्जियों में भाव खाने की आपस में होड़ में लगी हैं। लिखने के लिए तो बहुत कुछ है लेकिन पत्र में थोड़ा लिखने और ज्यादा समझने की परिपाटी है इसलिए अपनी कलम को विराम देती हूं। तुम्हारी..अपनी सखी ! पत्र पढ़कर गांव वाली सखी की आंखों में आंसू आ गए। उसकी प्यारी सखी इतने दारूण दुख झेल रही है, उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था । अपने भाग्य पर इठलाते हुए गांव वाली सखी ने पत्र के उत्तर में सहानुभूति प्रकट करने के लिए एक इमोजी अपनी प्यारी सखी के वाट्सऐप पर भेज दिया। इससे ज्यादा बेचारी और कर भी क्या सकती थी ।

साड़ी !

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

जयंती किसी भी विशेष समारोह में जाती,तो वह साड़ी पहन लेती थी। आज निशा के बेटे अंश का जन्मदिन था। घर में बर्थडे पार्टी थी। बड़े लोगों के आने की खबर सुन उसने महँगी साड़ी डाल ली। यह साड़ी उसके पति ने तीसरी सालगिरह पर दी थी। उसकी हैसियत से काफी कीमती थी। सो जयंती सोची इस साड़ी से जयंती का रुतबा शायद बरकरार रहेगा। लेकिन यह क्या ! सब उल्टा पड़ गया। निशा को अपनी बहन जयंती को साड़ी में नागवार गुजरता था। जयंती को देखते ही निशा लग गई खरी खोंटी सुनाने में। 'अपना नहीं तो कुछ हमारे स्टेट्स का तो सोच लो।' क्या हुआ निशा। 'होगा क्या खाक। जानती हो न यहां हम सबका उठना बैठना बड़े शहर और विदेशों में रहने वाले लोगों के साथ हैं। वे लोग आएंगे पार्टी में। और तुम गंवारन जैसी साड़ी पहनकर अब पसर जाओगी सोफे पर।ऊपर से बकबक हिंदी। 'उफ्फ'! निशा की झिड़की सुन जयंती नि:शब्द हो बुत सी खड़ी रही। लेकिन निशा का बड़बड़ाना बंद नहीं हुआ। सच ! अब तो मुझे भी अफ्सोस हो रहा है तुम्हें क्यों बुला ली अपने पास। शेखर सही कह रहा था। तुम्हारी बहन एक दिन हमारी इज्त को अच्छी तरह धो डालेगी,तुम देखना। इससे अच्छा तो कुछ दिनों के लिए एक और मेड रख लेती।' गुबार निकाल निशा पैर पटकते अपने कमरे में चली गयी। जयंती वहीं बैठे- बैठे ठंडे पत्थर होती जा रही थी। इतना बड़ा अपमान ! वो खुद को धिक्कार रही थी। आजीवन ऐसे रिश्तों से परहेज करने को उसके मन में कोलाहल हो रहा था। भूखे पेट सप्ताहों काटना जयंती के लिये आसान था।लेकिन क्षणिक अपमान कंटीली पत्थर के पहाड़ों सा लग रहा था। काली घनेरी रात को चीर कर भागने का मन हो रहा था लेकिन बहुत सोच विचार कर रात बिताने को मजबूर थी। कहीं बहन के द्वारा किया गया अपमान उसके पति तक ना पहुँचे। लेकिन इस अपमान का जबाब बिना दिये जाना, उसके स्वाभिमान के स्तर को नीचे धकेल रहा था। उसके गले रुँध गये थे। अविरल बहती आंसू आंख के कोर पर ही सूख जा रही थी। वह बचपन के पुराने दिनों को याद कर सोचने लगी। किस तरह वह अपने पुराने दुपट्टो को काटकर निशा के लिए नये नये परिधान बनाया करती थी। वह उसके आँखों में खुशियां देखने के लिये पागल होती रहती थी। और आज ! पश्चिमी परिधान का नशा इस पर इस तरह चढ़ गया है कि अच्छे- भले का ज्ञान भी भूल गई है। अगले सुबह जयंती तैयार होकर लिविंग रुम में अपने सामान लिये टैक्सी वाले को लोकेशन बता रही थी। निशा यह सब देख अचंभे में पर गई। पहली बार जयंती का बदला हुआ रूप देखी थी। 'इतनी सुबह कहाँ जा रही हो। निशा हड़बड़ाते हुये पूछी। जयंती फीकी मुस्कान और पूरी आत्मबल के साथ बोल पड़ी, 'अपने घर। जाते-जाते निशा तुम्हें एक बात कहना चाहती हूँ। साड़ी में सुकून मिलता हैं। मुझे व्यवहारपूर्ण और संपूर्ण स्त्री होने का बोध कराता हैं। वो क्या हैं ना तुम्हें याद हैं जब हम अपने छोटे शहर में बड़ी दुकानों के ऊपर मोटे मोटे अक्षरों में लिखा हुआ पढ़ते थे।। 'निशा बोली हाँ याद है।' साड़ी की शोभा नारी। नारी की शोभा साड़ी।' बाय कहते हुये जयंती बाहर निकल गईं।

'बच्चों को कला और संस्कृति का हो ज्ञान'

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर उ.प्र.

कला और संस्कृति किसी भी देश के विकास में कला का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह साझा दृष्टिकोण, मूल्य, प्रथा एवं एक निश्चित लक्ष्य को दिखाता है। सभी आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य गतिविधियों में संस्कृति एवं रचनात्मकता का समावेश होता है। विविधताओं का देश, भारत अपनी विभिन्न संस्कृतियों के लिए जाना जाता है।भारत में गीत-संगीत, नृत्य, नाटक-कला, लोक परंपराओं, कला-प्रदर्शन, धार्मिक-संस्कारों एवं अनुष्ठानों, चित्रकारी एवं लेखन के क्षेत्रों में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है जो मानवता की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' के रूप में जाना जाता है। इनके संरक्षण हेतु संस्कृति मंत्रालय ने विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं को कार्यान्वित किया है जिसका उद्देश्य कला-प्रदर्शन, दर्शन एवं साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों, समूहों एवं सांस्कृतिक संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है।

कला एक जादू की तरह है जो विभिन्न धर्मों और उनके संस्कृतियों के बीच अंतर करने में हमारी मदद करता है। संस्कृति लोगों के भोजन, कपड़े, भाषा, त्योहार और उनके धर्मों को अलग-अलग रूप से प्रदर्शित करता हैं। आपने बगीचे में तरह-तरह के फूलों को अवश्य ही देखा होगा। हर किसी की अपनी एक अलग सुंदरता, पहचान और एक अलग प्रकार की खुशबू होती है, पर वो सभी फूल एक साथ एक बगीचे में अपनी सुंदरता और महक को चारों ओर बिखेरते हैं। उसी प्रकार हमारा देश भारत भी अनेक विभिन्नताओं वाला देश हैं, जहां विभिन्न संस्कृति और कलाएं एक साथ रहती हैं। लोग अपनी-अपनी कला और संस्कृति के साथ आपस में एकजुटता से मिलजुलकर रहते हैं। विभिन्न समुदायों के बीच तालमेल विकसित करना आवश्यक है। संस्कृति से परे, कला लोगों की संज्ञानात्मक क्षमताओं और महत्वपूर्ण कौशल को भी बढ़ावा देती है, खासकर बच्चों में। यदि कला को शैक्षणिक पाठ्यक्रम से बाहर रखा जाता है, तो बच्चे को नई संस्कृतियों और वातावरणों के अनुकूल होने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कला युवा पीढ़ी को एक विविध राय सेट अपनाने में मदद करती है और समाज की जड़ों की ओर लोगों को सफलतापूर्वक प्रभावित करती है। कला के साथ, बच्चों को एक-दूसरे के साथ बंधने और रचनात्मक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। नियमित कला पाठ उनकी बुद्धि को उत्तेजित करने में मदद कर सकते हैं। जीवन के शुरुआती चरणों में, बच्चों को अक्सर भाषाई क्षमताओं और समस्या को सुलझाने के कौशल को समझने में कठिनाई होती है। हालांकि, कला बुनियादी अवधारणाओं को सरल बनाने में मदद करती है, इसका मतलब यह नहीं है कि शिक्षाविदों को कला द्वारा पूरी तरह से बदल दिया जाना चाहिए। दोनों संस्थाएँ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं और स्कूल के पाठ्यक्रम के लिए आवश्यक होनी चाहिए। हालाँकि, अगर एक साथ पढ़ाया जाए, तो शिक्षा और कला एक बच्चे के जीवन में सभी विषयों का स्वस्थ संतुलन देकर एक नया बदलाव ला सकते हैं।

शैक्षणिक विकास के अलावा, कला बच्चों में बेहतर भावनात्मक बुद्धिमत्ता से भी जुड़ी है। सभी कला रूप भावनाओं को उत्तेजित करने में मदद करते हैं और 21वीं सदी के शिक्षकों को बच्चों को बेहतर सोचने में मदद करने के लिए एक अभिनव तरीका पेश करते हैं। वैज्ञानिक विषयों को बेहतर तरीके से समझाने के लिए शिक्षक भी कला का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों के बुनियादी गणित सीखने की संभावना अधिक होती है यदि वे अपनी नोटबुक पर संख्या लिखने के बजाय आरेखीय प्रतिनिधित्व देखते हैं। भारत की कला संस्कृति का प्रदर्शन वैदिक काल से ही देखने को मिलता है इसका मतलब यह है कि इसकी शुरुआत पुराने समय में ही हो गयी थी। जब राजा महाराजा के समय में मूर्ति कला का प्रदर्शन होता था। भारत की कला संस्कृति की बात करे तो भारत देश की संस्कृति और सभ्यता पुरे विश्व में विख्यात है कला और संस्कृति हमारे भारत की धरोहर है भारत की कला और संस्कृति सांस्कृतिक रूप से भी हमारे देश की पहचान बने हुए है जहाँ एक ओर विदेशी संस्कृतियाँ विश्व में फैले हुए है वही हमारे देश की सभ्यता विदेशों में भी अपनी एक अलग जगह बनाये हुए है, भारत अपने, संगीत, नृत्य, लोकपरम्परा, रहन-सहन, संस्कृति, सभ्यताओं, परम्पराओं, प्रदर्शकला, अनुष्ठान, चित्रकला,रंगमंच,गानों से विश्व भर में मौजूद है। भारत की कला और संस्कृति का परिचय पूरी दुनियां देती है। भारत में अलगदृअलग जाति, धर्म तथा अलग-अलग संस्कृति के लोग रहते जाते है। यहाँ पर लोग विभिन्न प्रकार की भाषाये बोलते है, अलग-अलग कपड़े पहनते है, अलग-अलग त्यौहार मानते है, पर फिर भी उनमे समानताये है। हम कह सकते हैं कि स्कूलों को पाठ्यक्रम में कला को शामिल करना चाहिए। कला बच्चों को अपनी संस्कृति से जड़ से जोड़ने में मदद करती है और अपनेपन की भावना लाती है। कुल मिलाकर, छात्र अपने मूल्यों को अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं, इस प्रकार माता-पिता और शिक्षकों के लिए उनकी प्रगति को ट्रैक करना आसान हो जाता है।

अचानक से

अचानक से तेरा मुझको
यूं याद आ जाना।
वो तेरा मुस्कुराना जैसे
जैसे कालेज में पहला इश्क हो जाना।
वो तेरा शर्माना
जैसे खबरों का आम हो जाना।
वो तेरा पलकों को झपकाना
जैसे पतझड़ के बाद सावन का आ जाना।
यादों में तेरा याद आना
फिर आँख का नम हो जाना जैसे
सावन में बारिश का आना।
तेरा ऐसा चलना जैसे
सरसों का लहलहाना।
फिर अचानक से याद आना
हन्नान तेरी यादों में किसका आना।

हन्नान

स्वस्थ तन-मन, योग है मूलमंत्र

स्वतंत्रता दिवस पर सेवेन वायु सेना अस्पताल में सूर्य-नमस्कार व प्रतियोगिता का आयोजन

लोक पहल

कानपुर। स्वतंत्रता दिवस पर सेवेन वायु सेना अस्पताल में सूर्य-नमस्कार के 75 सेटों का एक मेगा योगाथॉन आयोजित किया गया। वायु सेना परिवार कल्याण संघ (एएफ एफ डब्ल्यूए) के सदस्यों, स्थानीय सेना इकाइयों, वायु सेना स्कूल कानपुर, कैंटोनमेंट बोर्ड स्कूल, लाल कुर्ती गांव और श्रवण-बाधित बच्चों के लिए ज्योति बधिर विद्यालय, बिठूर सहित 7 वायु सेना अस्पताल के सभी आयु वर्ग के 500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रमाणित हार्टफुलनेस योग प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन निःशुल्क योग प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम ध्वजारोहण और राष्ट्रगान के साथ शुरू हुआ और अस्पताल परिसर में पौधरोपण अभियान के साथ समाप्त हुआ।

ज्योति बधिर विद्यालय के छात्रों ने सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हुए राष्ट्रगान गाया। प्रतिभागियों ने 'स्वतंत्रता सेनानियों' की थीम पर 5-10 वर्ष की आयु के बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता भी हुई। योगाथॉन का आयोजन सभी आयु समूहों के लिए स्वास्थ्य के लिए फिटनेस मंत्र के रूप में योग के दैनिक अभ्यास की प्राचीन भारतीय परंपरा और संस्कृति को शामिल करने को लोकप्रिय बनाने के लिए किया गया था। अधिकतम भागीदारी की ट्रॉफी कैंटोनमेंट बोर्ड स्कूल, लाल कुर्ती गांव ने जीती। कार्यक्रम का विषय था 'हर कोई एक को अपनाए' (एक पौधा, एक बच्चा, एक स्कूल, एक गांव)। वहीं, 75 किमी लंबे साइक्लोथॉन को हरी झंडी दिखाई। इसका उद्देश्य लोगों को अपने दैनिक जीवन में साइकिल चलाने और मोटापे, आलस्य, तनाव, चिंता, बीमारियों आदि से मुक्ति पाने के लिए प्रोत्साहित करना था। साइक्लोथॉन को अस्पताल एमडब्ल्यूओ के माननीय एफजी ऑफिसर राकेश पाल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। स्कूली बच्चों, आईआईटी कानपुर के विभिन्न आयु वर्ग के 120 से अधिक साइकिल चालकों ने साइक्लोथॉन में भाग लिया। यह यात्रा ऐतिहासिक नाना राव पेशवा स्मारक पार्क, बिठूर और वाप अस्पताल पहुंची।

कौशल से मिलेगी आर्थिक आजादी: विकास श्रीवास्तव

प्रधानमंत्री कौशल केन्द्र पर मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

लोक पहल

झांसी। 77वे स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री कौशल केंद्र झांसी में ध्वजा रोहन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्राओं ने रंगोली के माध्यम से मेरी माटी मेरा देश विषय पर मनभावन रंगोली बनाई, तथा भाषण प्रतियोगिता में वीर शहीदों को याद करते हुए पुरुस्कार जीते।

आईसेक्ट के रीजनल मैनेजर विकास श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि कौशल के माध्यम से ही आर्थिक आजादी ली जा सकती है, वीरांगना लक्ष्मीबाई एवम वीर शहीदों को याद करते हुए स्वतंत्रता के उनके योगदान को याद किया। अपने हुनर में निखार के साथ ही वो अपनी आर्थिक आजादी हासिल कर सकते है। श्री श्रीवास्तव ने आईसेक्ट संस्था के संस्थापक संतोष चौबे को याद करते हुए उनके 38 वर्ष पूर्व 'कौशल विकास यात्रा' का परिचय देते हुए बताया कि 38 वर्ष पूर्व की दूरगामी सोच समाज के लिए कितनी लाभकारी सिद्ध हो रही है, उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए आईसेक्ट संस्था ने 2023 में स्कोप ग्लोबल स्किल यूनिवर्सिटी की भोपाल में स्थापना की, जिससे मध्य भारत के लोगो को इसका लाभ मिल सके। वही संस्था उत्तर प्रदेश में झांसी, जालौन, कानपुर, लखनऊ, चित्रकूट, आजमगढ़ में प्रधानमंत्री कौशल केंद्र के माध्यम से युवाओं को हुनर के साथ आर्थिक आजादी दिलवाने की दिशा में काम कर रही है। अंत में केंद्र व्यवस्थापक संदीप साहू धन्यवाद ज्ञापित किया।

शाहजहांपुर के सुखजीत की दुल्हन बनी दक्षिण कोरिया की किम बोह नी

पुवायॉ के गुरूद्वारे में सिख धर्म के रीति रिवाजों से हुआ विवाह

लोक पहल

शाहजहांपुर। पुवायॉ के सुखजीत सिंह को दक्षिण कोरिया की किम बोह नी से प्यार हो गया। प्रेम परवान चढ़ा तो जाति, धर्म और सरहदों की सीमाएं लांघकर पुवायां के सुखजीत सिंह की दुल्हन बन गईं दक्षिण कोरिया की किम बोह नी। पुवायां के गुरुद्वारे में दोनों ने फेरे लिए। इस दौरान सुखजीत के परिजन, रिश्तेदार और तमाम लोग मौजूद रहे। पुवायां के गांव उदना निवासी बल्देव सिंह किसान हैं। उनका 28 वर्षीय बेटा सुखजीत सिंह छह वर्ष पहले काम की तलाश में दक्षिण कोरिया गया था। सुखजीत बुसान के एक कॉफी शॉप में काम करते थे। दक्षिण कोरिया के देगू की 3 वर्षीय किम बोह नी भी वहां बिलिंग सेक्शन में काम करती थीं।

चार वर्ष पूर्व दोनों में बातचीत होने लगी और इसके बाद दोनों ने शादी करने का फैसला किया। चार वर्ष से सुखजीत और किम बोह नी अपने परिजनों की सहमति से लिव इन रिलेशनशिप में रहने लगे। चार माह पूर्व सुखजीत घर लौट आए थे। दो माह पूर्व किम भी अपने दिल्ली के एक दोस्त के साथ तीन माह के टूरिस्ट वीजा पर दिल्ली और वहां से पुवायां आ गईं। पुवायां के गुरुद्वारा नानक बाग में दोनों की सिख रीति-रिवाज से शादी हुई। यहां बता दें कि सुखजीत की मां हरजिंदर कौर गृहणी हैं। उनका एक छोटा भाई जगजीत सिंह है, जो घर पर खेती के काम में ही हाथ बंटाता हैं। किम बोह नी को भारत की ओर से पांच वर्ष का वीजा दिया गया है। वह तीन माह के लिए यहां आई हैं। किम बोह को गांव उदना में रहते दो माह पूरे हो चुके हैं। अब शादी हो गई है। एक माह अभी उदना में ही रहने के बाद समय पूरा होने वह दक्षिण कोरिया लौट जाएंगी। सुखजीत सिंह ने बताया कि एक माह बाद उनकी पत्नी किम बोह वापस अपने देश चली जाएंगीं। इसके बाद किम बोह फिर भारत आएंगी। बाद में वे दोनों दक्षिण कोरिया जाएंगे। उनका दक्षिण कोरिया में ही बसने का प्लान है।

कांग्रेस ने यूपी में लगाया अजय राय पर दांव

प्रदेश की सड़कों पर नये अंदाज में उतरने की तैयारी

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव से पहले बड़ा फेरबदल किया है। पार्टी ने प्रदेष अध्यक्ष ब्रजलाल खाबरी को हटाकर पूर्व विधायक अजय राय को प्रदेश की कमान सौंप कर एक साथ कई निशाने साधे हैं। राय लगातार पांच बार विधायक रहे हैं। पार्टी ने राय की नियुक्ति के जरिए यह साफसंदेश देने का प्रयास किया है कि वह नए सिरे से संघर्ष के लिए तैयार हो रही है। दूसरी तरफ इंडिया की ताकत बढ़ाने का भी विकल्प दिया है। प्रदेश की सियासी नब्ज पर नजर रखने वालों का कहना है कि प्रदेश अध्यक्ष बृजलाल खाबरी को हटाकर भूमिहार जाति के अजय राय की ताजपोशी के कई मायने हैं।

विपक्ष की भूमिका में आने के बाद कांग्रेस की पहचान जनहित के मुद्दे पर निरंतर संघर्ष के लिए रही। लेकिन वक्त बदले और समय के साथ उसकी कार्यप्रणाली में भी बदलाव हुआ, जिसका नतीजा रहा कि पार्टी धीरे-धीरे सियासी जमीं से उखड़ती गई। पार्टी ने करीब छह माह बाद एक अक्तूबर 2022 को नया प्रयोग करते हुए दलित वर्ग से ताल्लुक रखने वाले पूर्व सांसद बृजलाल खाबरी को अध्यक्ष और नकुल दुबे, वीरेंद्र चौधरी, अनिल यादव, योगेश दीक्षित, अजय राय और नसीमुद्दीन को प्रांतीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी। ये सभी प्रांतीय अध्यक्ष अलग-अलग इलाके और अलग-अलग जातियों से थे। इस रणनीति के जरिए कांग्रेस हाईकमान ने हर क्षेत्र को एक अध्यक्ष देकर संगठन को सक्रिय करने की रणनीति बनाई। पूर्व सांसद खाबरी हों या नसीमुद्दीन, इनके नेतृत्व को लेकर मायावती सवाल खड़े कर सकती थीं। अब ये नेता पर्दे के पीछे रहेंगे। बसपा से तालमेल के लिहाज से यह पृष्ठभूमि भी हो सकती है। कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बृजलाल खाबरी को सिर्फ 11 माह का कार्यकाल मिला। कांग्रेस हाईकमान ने अब तक कांग्रेस के प्रांतीय अध्यक्ष रहे पूर्व विधायक अजय राय को प्रोन्नति देते हुए प्रदेश अध्यक्ष बनाया है। वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ भी वाराणसी से चुनाव लड़ चुके हैं। नवनियुक्त अध्यक्ष ने बताया कि संगठन की सक्रियता और लोकसभा चुनाव में दमदार प्रदर्शन उनकी प्राथमिकता होगी। पार्टी के हर नेता एवं कार्यकताओं के मान- सम्मान की रक्षा की जाएगी।

कन्या सुमंगला योजना पर कार्यशाला का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। विकास खण्ड भावलखेड़ा के सभागार में कन्या सुमंगला योजना पर कार्यषाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अमृता दीक्षित ने आंगनबाड़ियों को मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना का आवेदन कराने के लिए जागरूक किया। उन्होंने बताया कि परिवार में जिनके दो बच्चे होंगे, जिसमें एक बेटा या एक बेटी व दोनों बेटियां हो तो उस परिवार की बेटियों को कन्या सुमंगला योजना की छह श्रेणियां के अनुसार योजना का लाभ आवेदन करने के बाद दिया जाएगा। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना की अहर्ताओं व पात्रता के बारे में भी जानकारी दी गई। इसी के साथ मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के अधिक से अधिक आवेदन कराने को लेकर आंगनबाड़ियों, साहिकायो व आशाओं को जागरूक किया गया व जानकारी दी गई। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभागीय योजनाओं के विषय में कार्यशाला में जुड़ी आंगनबाड़ियों को निराश्रित महिला पेंशन योजना, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना, वन स्टॉप सेंटर योजना आदि योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। जिसमें मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के अधिक से अधिक आवेदन कराने के लिए प्रेरित किया गया। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में सीडीपीओ कमलेश यादव ,सुपरवाइजर, समस्त आंगनबाड़ी मौजूद रहीं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस समय की मांग: पवन कुमार

एसएस कालेज में तीन दिवसीय सेमिनार का शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहाँपुर। एसएस कॉलेज के वाणिज्य संकाय में बीकॉम के छात्रों के लिए तीन दिवसीय सेमिनार का उद्घाटन हुआ। सेमिनार का विषय था 'डिजिटल मार्केटिंग और कंप्यूटराइज्ड एकाउंटिंग के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं'। सेमीनार के मुख्य अतिथि बरेली कॉलेज बरेली के गणित विभाग के प्रो. पवन कुमार शर्मा ने कहा कि आज का युग डिजिटल युग है। अंकों की गणित ने ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को विकसित किया है। जो आज के समय की मांग है। बरेली कॉलेज के डा. आशुतोष उपाध्याय ने कहा कि कंप्यूटराइज्ड अकाउंटिंग गणित पर ही आधारित है कंप्यूटराइज्ड अकाउंटिंग के लिए वाणिज्य के साथ-साथ कंप्यूटर का ज्ञान भी आवश्यक है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बरेली कॉलेज के भौतिक विज्ञान के प्रो. अजय कुमार सिंह ने कहा कि वाणिज्य क्षेत्र में गणित और विज्ञान के मिश्रण ने अनेक आधुनिक तकनीकियों को जन्म दिया है। डॉ पंकज यादव ने कहा कि कंप्यूटराइज्ड अकाउंटिंग के ज्ञान व प्रशिक्षण से विद्यार्थी लोकल व्यापारिक प्रतिष्ठानों के एकाउंट बनाकर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। डा. रूपक श्रीवास्तव के संचालन में हुए कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी शुकदेवानंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो. अनुराग अग्रवाल ने अतिथियों का परिचय देने के साथ विषय स्थापना की। जबकि डा. देवेंद्र सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डा. कमलेश गौतम, डा. गौरव सक्सेना, डा. विजय तिवारी, डा. अजय कुमार वर्मा, डा. संतोष प्रताप सिंह, डा. सचिन खन्ना, बृजलाली, श्री अखंड प्रताप सिंह, यशपाल कश्यप, देव सिंह कुशवाहा आदि उपस्थित रहे।

आवश्यकता है
लोक पहल
साप्ताहिक समाचार पत्र को
जनपद शाहजहाँपुर के समस्त क्षेत्रों, तहसीलों, ब्लाक एवं ग्राम स्तर पर संवाददाता चाहिए।
पूर्ण बायोडाटा सहित आवेदन करें।
सम्पर्क करें : 9935740205, 9455152599 | Write to us : lokpahalspn@gmail.com

हरियाली तीज

प्राचीन शिव मंदिरों के करें दर्शन

श्रावण मास जारी है। यह माह भगवान शिव का बहुत प्रिय माना जाता है। सावन में शिव जी की उपासना की जाती है और शिव मंदिरों के दर्शन कर पूजा अर्चना करते हैं। सावन के महीने में हरियाली तीज, नागपंचमी जैसे त्योहार मनाए जाते हैं। यह पर्व भी भगवान भोलेनाथ से जुड़े हुए हैं। इस मौके पर देशभर के शिव मंदिरों में भव्य आयोजन होते हैं। मंदिर में भक्तों की भीड़ लगती है, जो भगवान भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिए जलाभिषेक और पूजा अर्चना करने यहां पहुंचते हैं। इस वर्ष हरियाली तीज 19 अगस्त को है। हरियाली तीज के मौके पर शिव मंदिरों के दर्शन के लिए जा सकते हैं। भारत के कुछ प्राचीन और अद्भुत शिव मंदिरों में दर्शन करने का प्लान बनायें।

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग, बनारस

दो दिन का वक्त है तो उर की पवित्र नगरी बनारस जा सकते हैं। बनारस को काशी या वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है। यह बाबा विश्वनाथ का धाम है। बनारस में गंगा नदी के पश्चिम घाट पर सातवें ज्योतिर्लिंग काशी विश्वनाथ का मंदिर है। मान्यता है कि यह शहर शिव जी के त्रिशूल पर टिका है। हरियाली तीज या नागपंचमी के मौके पर काशी विश्वनाथ मंदिर में काफी भीड़ हो सकती है।

तुंगनाथ मंदिर, गढ़वाल

दुनिया का सबसे ऊंचा शिव मंदिर तुंगनाथ मंदिर है, जो कि उराखंड के गढ़वाल के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित है। महादेव के पंच केदारों में से एक यह मंदिर चारों ओर से बर्फ से ढका रहता है।

जटोली मंदिर सोलन

हरियाली तीज वीकेंड पर मनाया जा रहा है और इसके बाद सोमवार को नागपंचमी है। अगर आपके पास तीन दिन का वक्त है और परिवार या दोस्तों संग किसी ट्रिप पर जाने की इच्छा है तो एशिया के सबसे ऊंचे शिव मंदिर के दर्शन के लिए जा सकते हैं। यह मंदिर हिमाचल प्रदेश के सोलन शहर से करीब सात किलोमीटर दूर है। एशिया के सबसे ऊंचे शिव मंदिर का नाम जटोली मंदिर है। मंदिर को दक्षिण द्रविड़ शैली से बनाया गया है।

शंगचुल महादेव मंदिर, कुल्लू

महाभारत काल से हिमाचल प्रदेश के कुल्लू के शांघड़ गांव में एक प्राचीन शिव मंदिर है, जो शंगचुल महादेव के नाम से मशहूर है। शंगचुल महादेव मंदिर का सीमा क्षेत्र करीब 100 बीघा का मैदान है। जैसे ही इस सीमा में कोई प्रेमी युगल पहुंचता है वैसे ही उसे देवता की शरण में आया हुआ मान लिया जाता है। यहां भागकर आए प्रेमी युगल के मामले जब तक सुलझ नहीं जाते तब तक मंदिर के पंडित प्रेमी युगलों की खातिरदारी करते हैं।

हंसना मना है

सिपाही-घटना स्थल से थानेदार को फोन लगाकर बोला, जनाब यहां एक औरत ने अपने पति को गोली मारदी! थानेदार-हें? सिपाही- योंकि उसका पति पोछा लगे हुए गीले फर्श पर चलने लगा था! थानेदार - तुमने गिरतार कर लिया उसको! सिपाही- नहीं साहब, पोछा अभी सूखा नही है.!

एक मुर्गी के बच्चे ने अपनी मां से पूछा? मां- इंसान पैदा होते ही अपना नाम रख लेते हैं, हमलोग अपना नाम यों नहीं रखते, मां ने कहां-बेटा, अपनी बिरादरी में नाम मरने के बाद रखा जाता है! चिकेन टि ा, चिकेन चिली, चिकेन तंदूरी, चिकेन मलाई, चिकेन कढ़ाई..

परीक्षा में एक लड़की ने बगल वाली सीट पर बैठे लड़के से पूछा कि यमक अलंकार की परिभाषा बताओ एक उदाहरण के साथ, लड़के ने बोला- जब एक ही शब्द दो बार आवे और दोनों शों का अर्थ भिन्न भिन्न हो तो उसे यमक अलंकार कहते हैं, जैसे- तुम रूठा ना करो, मेरी जान! मेरी जान निकल जाती है। लड़के को नोबल पुरस्कार देने पर विचार किया जा रहा है.?

लड़का- तुम लड़कियां विदाई के टाइम इतना रोती यों हो? लड़की- जब तू जाएगा ना, बिना तनाह के दूसरे के घर का काम करने तो तू भी रोयेगा।

कहानी | मेंढक और चूहा

घने जंगल में एक छोटा-सा जलाशय था। उसमें एक मेंढक रहा करता था। उसे एक दोस्त की तलाश थी। एक दिन उसी जलाशय के पास के एक पेड़ के नीचे से चूहा निकला। चूहे ने मेंढक को दुखी देखकर उससे पूछा, दोस्त या बात है तुम बहुत उदास लग रहे हो। मेंढक ने कहा कि मेरा कोई दोस्त नहीं है, जिससे मैं ढेर सारी बातें कर सकूं। अपना सुख-दुख बताऊं।' इतना सुनते ही चूहे ने उछलते हुए जवाब दिया कि अरे! आज से तुम मुझे अपना दोस्त समझो, मैं तुरे साथ हर वक्त रहूंगा।' इतना सुनते ही मेंढक बेहद खुश हुआ। दोनों घंटों एक दूसरे से बातें करने लगे। दोनों के बीच की दोस्ती दिनों-दिन काफी गहरी होती गई। होते-होते मेंढक के मन में हुआ कि मैं तो असर चूहे के बिल में उससे बातें करने जाता हूं, लेकिन चूहा मेरे जलाशय में कभी नहीं आता। ये सोचते-सोचते चालाक मेंढक ने चूहे से कहा, 'दोस्त हमारी मित्रता बहुत गहरी हो गई है। अब हमें कुछ ऐसा करना चाहिए, जिससे एक दूसरों की याद आते ही हमें आभास हो जाए।' चूहे ने हामी भरते हुए कहा, 'हां जरूर, दुष्ट मेंढक फटाक से बोला, 'एक रस्सी से तुरी पूंछ और मेरा एक पैर बांध दिया जाए, तो जैसे ही हमें एक दूसरे की याद आएगी तो हम उसे खींच लेंगे, जिससे हमें पता चल जाएगा।' भोला चूहा एकदम इसके लिए राजी हो गया। मेंढक ने जल्दी-जल्दी अपने पैर और चूहे की पूंछ को बांध दिया। इसके बाद मेंढक ने एकदम पानी में छलांग लगा ली। मेंढक खुश था, योंकि उसकी तरकीब काम कर गई। वहीं, जमीन पर रहने वाले चूहे की पानी में हालत खराब हो गई। कुछ देर छटपटाने के बाद चूहा मर गया। बाज आसमान में उड़ते हुए यह सब रहा था। उसने जैसे ही पानी में चूहे को तैरते हुए देखा तो बाज तुरंत उसे मुंह में दबाकर उड़ गया। दुष्ट मेंढक भी चूहे से बंधा हुआ था, इसलिए वो भी बाज के चंगुल में फंस गया। वो सोचने लगा आखिर वो आसमान में उड़ कैसे रहा है। जैसे ही उसने ऊपर देखा तो बाज को देखकर वो सहम गया। वो भगवान से अपनी जान की भीख मांगने लगा, लेकिन चूहे के साथ-साथ बाज उसे भी खा गया।

7 अंतर खोजें

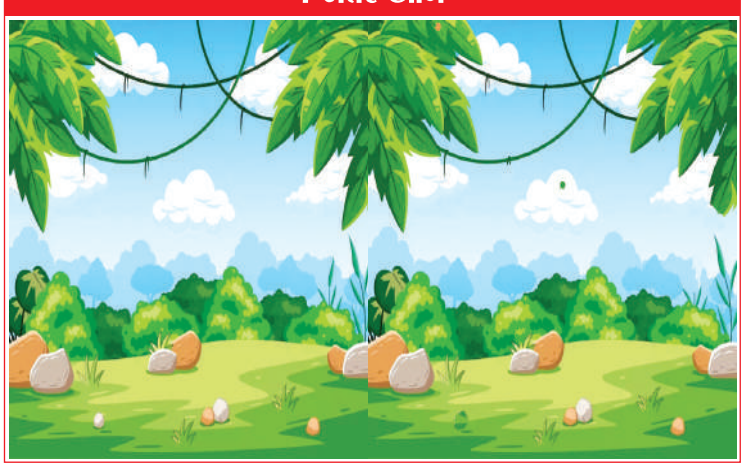

जानिए कैसा रहेगा यह सप्ताह

मेष

लाभ के अवसर हाथ आएंगे। रोजगार में वृद्धि होगी। मित्रों की सहायता कर पाएंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यापार लाभदायक रहेगा।

वृषभ

जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। आय बनी रहेगी। भाइयों का सहयोग मिलेगा। निवेश शुभ रहेगा। आज के काम कल पर नहीं टालें। विवेक का प्रयोग करें।

मिथुन

जल्दबाजी में कोई भी लेन-देन न करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। फालतू खर्च होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

कर्क

किसी अपरिचित व्यक्ति अंधविश्वास न करें। समय नेष्ट है। नकारात्मकता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें।

सिंह

शत्रु शांत रहेंगे। धनलाभ के अवसर हाथ आएंगे। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे मित्रों का सहयोग मिलेगा।

कन्या

संतान पक्ष से स्वास्थ्य तथा अध्ययन संबंधी चिंता रहेगी। नई योजना बनेगी। तत्काल लाभ नहीं मिलेगा। कार्यशैली में परिवर्तन करना पड़ सकता है।

तुला

थकान व कमजोरी रह सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। किसी धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

वृश्चिक

प्रेम-प्रसंग में हड़बड़ी न करें। विवाद हो सकता है। नकारात्मकता रहेगी। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में लापरवाही न करें। युवक व युवती विशेष सावधानी बरतें।

धनु

कानूनी बाधा संभव है। हल्की हंसी-मजाक करने से बचें। विरोधी सक्रिय रहेंगे। धनहानि किसी भी तरह हो सकती है। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा।

मकर

सुख के साधनों पर व्यय होगा। स्थायी संपत्ति में वृद्धि के योग हैं। प्रॉपर्टी के काम बड़ा लाभ दे सकते हैं। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। नौकरी में सुख-शांति रहेंगे।

कुंभ

मनोरंजक यात्रा की आयोजना हो सकती है। किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा। कारोबार मनोनुकूल रहेगा।

मीन

दूसरों के काम में हस्तक्षेप न करें। दुःखद समाचार प्राप्त हो सकता है। अपेक्षित कार्यों में विलंब होने से खिन्नता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। भागदौड़ रहेगी।

बॉलीवुड | मन की बात

फिल्म 'खून भरी मांग' की शूटिंग के दौरान बढ़ गई थी मेरी धड़कन : राकेश

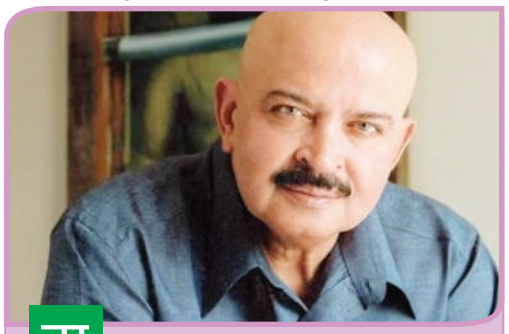

राकेश रोशन के निर्देशन में बनी फिल्म 'खून भरी मांग' की रिलीज को 35 साल पूरे हो चुके हैं। साल 1988 में आई इस फिल्म को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला था। आज ये फिल्म बॉलीवुड की लासिक फिल्मों में शामिल है। इस फिल्म में रेखा के आइकॉनिक लुस को दर्शक आज भी नहीं भूले हैं। फिल्म की रिलीज को 35 साल होने पर डायरेटर राकेश रोशन ने फिल्म की लीड एट्रेस और इस फिल्म से जुड़े कुछ मजेदार किस्से साझा किए हैं। राकेश रोशन ने बताया कि इस फिल्म के लिए हमेशा से रेखा ही उनकी पहली पसंद थीं। उन्होंने रेखा को ध्यान में रखते हुए ही फिल्म की स्क्रिप्ट लिखी थी और स्क्रिप्ट खत्म करते ही वह एट्रेस के पास पहुंच गए थे। राकेश रोशन के मुताबिक 'खून भरी मांग' की स्क्रिप्ट सुनते ही रेखा काफी उत्साहित हो उठी थीं। इस लासिक फिल्म के बारे में आगे बात करते हुए राकेश रोशन कहते हैं, फिल्म की स्क्रिप्ट लिखते हुए मेरे दिमाग में कोई स्टारकास्ट नहीं थी। मुझे बस पता था कि रेखा मेरी फिल्म में लीड रोल अदा करने वाली हैं। वह इस रोल के लिए सबसे बेस्ट थीं। वह इंडियन और वेस्टर्न दोनों ही लुक में काफी खूबसूरत लगती हैं। फिल्म के बारे में आगे बात करते हुए उन्होंने बताया कि इस फिल्म के एक सीन के लिए रेखा को घुड़सवारी करनी थी, लेकिन उन्होंने पहले कभी घुड़सवारी नहीं की थी। वह कहते हैं, एक ही रंग के चार घोड़े थे और रेखा को उनमें से किसी एक पर सवारी करनी थी। जब सीन शूट करने का वक्त आया तो उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने पहले कभी घुड़सवारी नहीं की है। डायरेटर ने आगे बताया कि रेखा ने उन्हें आश्वासन दिया कि भले ही उन्होंने पहले कभी घुड़सवारी नहीं की थी,लेकिन वह फिल्म के लिए कर लेंगी। इंटरव्यू में एट्रेस की तारीफ करते हुए राकेश रोशन ने कहा कि रेखा को देखकर ये कहना बहुत मुश्किल था कि वह पहली बार घुड़सवारी कर रही है। हालांकि, उस पूरे सीन के दौरान निर्देशक के दिल की धड़कन बड़ी हुई थी कि कहीं एट्रेस गिर न जाएं।

'खुशी' के प्रचार के दौरान फैंस के प्यार को देखकर

भावुक हुई सामंथा

सामंथा रुथ प्रभु जल्द ही फिल्म खुशी में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म में उनके साथ विजय देवरकोंडा भी हैं। हाल ही में फिल्म का ट्रेलर रिलीज किया गया था, जिसे लोगों ने खूब पसंद किया था। फिलहाल, दोनों सितारे इस फिल्म के प्रमोशन में जुटे हुए हैं। हाल ही में अभिनेत्री ने हैदराबाद में आयोजित फिल्म के संगीत समारोह में पहुंची थीं। इवेंट में फैंस के प्यार को देखकर सामंथा भावुक हो गईं। कार्यक्रम में उन्होंने अपनी फिल्मों से उन सभी का मनोरंजन करने के लिए कड़ी मेहनत करने और पूरी तरह स्वस्थ होकर वापस आने का वादा किया। बता दें कि सामंथा ने हाल ही में सिटाडेल-इंडिया की शूटिंग पूरी की थी, इसके बाद उन्होंने काम से ब्रेक ले लिया। फिलहाल, वह मायोसिटिस नाम की बीमारी से रिवकर कर रही हैं।

इवेंट में उन्होंने कहा,आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे नहीं पता कि या कहूं। मैं आपके लिए कड़ी मेहनत करूंगी। मैं पूरी तरह स्वस्थ्य होकर वापस आऊंगी और एक ॅकबस्टर फिल्म दूंगी। मैं आपसे वादा करती हूं। इस प्यार के कारण ऐसा करूंगी। खुशी की बात करें तो इसका निर्देशन शिव निर्वाण ने किया है। यह एक रोमांटिक कॉमेडी है, जिसमें विजय देवरकोंडा और सामंथा लीड रोल में हैं। यह फिल्म एक सितंबर को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। इसकी रिलीज से पहले, निर्माताओं ने नौ अगस्त को ट्रेलर लॉन्च किया था। वहीं, स्वतंत्रता दिवस के मौके पर मेकर्स ने कॉन्सर्ट का आयोजन किया था। फिल्म में सचिन खेडेकर, सरन्या पोनवन्नन, मुरली शर्मा, लक्ष्मी, रोहिणी, वेनेला किशोर, जयराम और राहुल रामकृष्ण जैसे कलाकार भी नजर आने वाले हैं। मैत्री मूवी मेकर्स द्वारा निर्मित इस फिल्म में संगीत हेशम अुल वहाब

किंग खान के साथ काम करना चाहती हैं फारिया

हिंदी सिनेमा के बादशाह अभिनेता शाहरुख खान वर्तमान में उन सितारों में से एक हैं, जिनके साथ काम करना कई नवोदित कलाकारों का सपना होता है। सोनी लिव पर हालिया प्रदर्शित वेब सीरीज द जेंगाबुरू कर्स से हिंदी वेब सीरीज की दुनिया में कदम रखने वाली अभिनेत्री फारिया अुला भी उन्हीं नवोदित कलाकारों में शामिल है।
कई दक्षिण भारतीय फिल्में कर चुकी फारिया ने अपने इस सपने को साकार करने के लिए शाहरुख की आगामी फिल्म जवान के लिए भी ऑडिशन दिया था, लेकिन किस्मत ने उनका साथ नहीं दिया। इस बारे में दैनिक जागरण से बातचीत में फारिया बताती हैं, 'ऑडिशन के लिए मुझे मुंबई बुलाया गया था, मैंने एक राउंड ऑडिशन दिया था। यह ऑडिशन एक एशन आधारित भूमिका के लिए थी, जो फिल्म के ट्रेलर में दिखी शाहरुख के लड़कियों की टीम में से एक होती है। सान्या मल्होत्रा भी उसी टीम में से एक हैं। मुझे ऑडिशन देने के दौरान ही यह सोचकर मजा आया था कि मैं रेड चिलीज के लिए और शाहरुख खान के साथ काम करने के लिए ऑडिशन दे रही हूं। उस समय तो मैं ऑडिशन से ही खुश थी। ऑडिशन के बाद कभी आपका चुनाव होता है और कभी नहीं होता। जवान में मेरा चुनाव नहीं हुआ।' द जेंगाबुरू कर्स के बाद हिंदी सिनेमा को लेकर अपनी उीदों पर फारिया कहती हैं, 'मेरे बड़े-बड़े सपने हैं और बचपन से जिन फिल्मों, निर्देशक और कलाकारों से प्रेरणा मिली है, वो सब यही (हिंदी सिनेमा) से हैं।

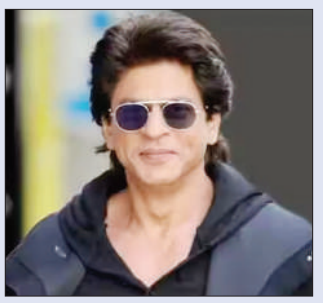

एक बार में 30 अंडे तक देती है मादा कोबरा, पीले वाले अंडे से नर तो धारीदार से होता है मादा का जन्म

किंग कोबरा प्रजाति के सांप ज्यादातर भारत और एशिया के अन्य देशों में पाए जाते हैं। इनका जीवन काल 20 से 25 साल तक होता है। यानी इतने दिनों तक ये जिंदा रह सकते हैं। इस नस्ल के सांपों की लंबाई आमतौर पर 10 से 13 फीट तक होती है।
सबसे जहरीले सांपों में से एक किंग कोबरा भारत, मलेशिया, इंडोनेशिया, ंमार और बांग्लादेश में पाए जाते हैं। यह कई दिनों तक भूखा रह सकता है। लेकिन अगर खाने का मन हो तो अन्य जहरीले सांपों को भी यह खा जाता है। सबसे इंट्रेस्टिंग फै, कोबरा डंस ले तो यह जरूरी नहीं कि उसने शरीर में अपना जहर भी डाला है। यह कई बार बिना जहर दिए भी किसी को काट सकता है, योंकि यह जहर देना खुद तय करते हैं। अगर जहर नहीं डाला तो इंसान का बचना आसान है। इस सांप की नस्ल की डिमांड इसलिए भी ज्यादा है योंकि मादा किंग कोबरा सबसे ज्यादा अंडे देती है। वह घोंसला बनाकर अंडे देती है और उनकी रक्षा भी स्वयं करती है। यहां तक कि किसी भी परिचित सांपों को भी उनके पास फटकने नहीं देती।
मादा किंग कोबरा एक बार में 10 से 30 अंडे तक देती है। आमतौर पर अप्रैल-जुलाई में अंडे निकलते हैं। यह अंडे 45 से 70 दिनों में फूटते हैं और तब जाकर उनमें से किंग कोबरा का जन्म होता है। मादा किंग कोबरा जब अंडे देती है तो पहले उसका चौड़ा बेस बनाती है। और फिर पहाड़ की तरह एक के ऊपर एक के क्रम में अंडे देती है। स्वर्ण के समान पीला दिखने वाले अंडों से नर सांप जबकि लंबी धारीदार रेखाओं वाले अंडों से मादा कोबरा का जन्म होता है। अंडों से निकले बच्चों की लंबाई 20 से 30 सेंटीमीटर यानी 8 से 12 इंच तक होती है। सात दिनों तक इनका रंग सफेद होता है, जबकिउसके बाद काला होने लगता है। दांत निकल आते हैं और सिर्फ 21 दिन के अंदर इनमें विष पैदा होने लगता है।

अजब-गजब | इसे कहा जाता है भूतों का शहर!

यहां बने हैं एक से बढ़कर एक खूबसूरत बंगले, पर खरीदने नहीं आया इन्हें कोई

कहते हैं मकान वीरान और बंजर होते हैं और इनमें रहने वाले ही इन्हें घर बनाते हैं। ये बात भी कहीं से भी गलत नहीं है योंकि बिना इंसानों के घरों के ईट-पत्थरों का कोई मोल नहीं रह जाता है। इसी बात की तस्दीक करता है पड़ोसी देश में चीन में बनाया गया एक आलीशान शहर, जो भूतिया शहर बन गया। यहां दूर-दूर तक कोई इंसान नहीं है, हालांकि खूबसूरत घर मौजूद हैं।

जिस ज़माने में इंसान सुंदर घर के लिए कोई भी कीमत देने को तैयार रहता है, उस ज़माने में संगमरमर और कीमत पत्थरों से बने हुए एक से बढ़कर एक बंगले खाली पड़े रहें, तो बात पचती नहीं है। चीन के उरी पूर्वी प्रांत ग्रीनलैंड में ऐसा ही हुआ है। यहां कभी देश के सबसे रईस लोगों का ठिकाना होना था, लेकिन अब यहां सिर्फ भूत-प्रेत ही बसते हैं।

वेबसाइट ऑडिटी सेंट्रल के मुताबिक ग्रीनलैंडके लियाओनिंग में चीन के सबसे अमीर लोगों के लिए 260 विला के गेस्ट मेंशन प्रोजेट की शुरुआत हुई थी। ये मामला साल 2010 का है, जिसे ग्रीनलैंड कंपनी ने शुरू किया था। दो साल तक यहां ज़ोर-शोर से काम भी हुआ, जिसकी तमाम तस्वीरें मौजूद हैं लेकिन अचानक ही इस प्रोजेट को अधर में छोड़ दिया गया। इसकी सही-सही वजह कोई नहीं बता पाया। कुछ लोगों ने कहा फंड की कमी थी तो कुछ का कहना है कि खरीदने वाले ही नहीं मिले। यहां आधे-अधूरे बने घरों को कोई पूछने भी नहीं आया और आज की तारीख में ये किसी भूतहे शहर से कम नहीं है।

ये पूरा शहर किसी उजाड़ जंगल जैसा लगता है, जहां अब किसानों ने का कर लिया है। विला और मेंशन में उनके मवेशी बंधते हैं और छोड़ी हुई ज़मीनों पर किसानों ने फसल लगानी शुरू कर दी है। घर के अंदर के हिस्से में पेड़-पौधे उग आए हैं और खूबसूरत इंटीरियर के बीच गाय-बछड़े घूमते रहते हैं। वैसे चीन में ये अकेला भूतिया शहर नहीं है, इसके अलावा भी कई प्लांड सिटीज़ खाली ही पड़ी हुई हैं।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।